

वर्ष:17 | अंक : 01 | जनवरी, 2026 | मूल्य: ₹ 10 /=-

हंसलोक संदेश

श्री हंस जयंती
125 वर्ष



नव वर्ष - **2026** की हार्दिक शुभकामनाएं!
परमपूज्य श्री भोले जी महाराज

भारतीय संस्कृति, अध्यात्म व सामाजिक एकता की प्रतीक हिंदी मासिक पत्रिका



हंसलोक संदेश

भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिक ज्ञान व सामाजिक एकता की प्रतीक

वर्ष-17, अंक-1
जनवरी, 2026
पौष-माघ, 2082 वि.स.
प्रकाशन की तारीख
प्रत्येक माह की 5 व 6 तारीख

मुद्रक एवं प्रकाशक-

श्री हंसलोक जनकल्याण समिति (रजि.)
श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, (खसरा नं. 947),
छतरपुर-भाटी माइंस रोड, भाटी, महारौली,
नई दिल्ली-110074 के लिए मंगल द्वारा
एमिनेंट ऑफसेट, डी-94, ओखला इण्डस्ट्रियल
एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110020
से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया।

सम्पादक- राकेश सिंह

मूल्य-एक प्रति-रु.10/-

पत्राचार व पत्रिका मंगाने का पता:

कार्यालय: हंसलोक संदेश

श्री हंसलोक जनकल्याण समिति,
B-18, भाटी माइंस रोड, भाटी,
छतरपुर, नई दिल्ली-110074

मो. नं. : 8800291788, 8800291288

Email: hansloksandesh@gmail.com

Website: www.hanslok.org

Subject to Delhi Jurisdiction

RNI No. DELHIN/2010/32010

संपादकीय

योग है जीवन की परिपूर्णता

योग ऐसी साधना है, जो मनुष्य को बौद्धिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ रखने के साथ-साथ उसे आंतरिक शांति और संतुलन प्रदान करती है। यह केवल आसनों का अभ्यास नहीं, बल्कि जीवन जीने की पूर्ण कला है। योग से गंभीर बीमारियों से मुक्ति मिल सकती है, इसलिए इसे अपनी जीवनशैली का हिस्सा बनाकर जीवन को आनंद से भरा जा सकता है। योग में कार्यक्षमता बढ़ाने की क्षमता है, इसलिए इसका महत्व हर जगह देखा जा रहा है। योग शरीर और आत्मा का मिलन कराता है। अक्सर लोग इसे मात्र व्यायाम मानते हैं, लेकिन यह एक संपूर्ण दर्शनशास्त्र है, जो मनुष्य को उसके वास्तविक स्वरूप से परिचित कराता है। यह भारतीय संस्कृति की अमूल्य विद्या है, जिसे अपनाने से शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और व्यावहारिक विकास होता है। योग से जीवन दिव्य बनता है और व्यक्ति अपने भाग्य को स्वयं गढ़ने में समर्थ होता है। जीवन की परिपूर्णता, समाधान और मनुष्य में निहित आध्यात्मिक शक्तियों के जागरण की वैज्ञानिक विधा है योग। यह आनंद का ऐसा स्रोत है, जो मानव कल्याण के लिए अत्यंत आवश्यक है। योग के नियमित अभ्यास से आचार-विचार अच्छे होते हैं और जीवन में अनुशासन आता है। यही कारण है कि भारत ने योग और अध्यात्म विश्व को उपहार में दिया, जिसके महत्व को पूरी दुनिया समझती है। चरित्र निर्माण में भी योग का बहुत महत्व है। इससे चेहरे पर तेज और वाणी में मधुरता आती है। यह तनावमुक्त जीवन देता है। परिवार और समाज में मधुर संबंध स्थापित करने में भी योग सहायक होता है। योग नकारात्मक विचारों को सकारात्मक दिशा में ले जाता है, जिससे व्यक्ति निराशा और हताशा से मुक्त होकर उत्साहपूर्ण जीवन जी पाता है।

योग मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक तीनों स्तरों की साधना है। योग किसी विशेष साधन का मोहताज नहीं है। इसे हर व्यक्ति अपना सकता है। नियमित आसन और प्राणायाम भी हमें निरोगी और स्वस्थ रख सकते हैं। यम-नियमों के पालन से जीवन अनुशासित बनता है, ध्यान और धारणा से तनाव दूर होता है तथा कार्यक्षमता बढ़ती है। यह न केवल स्वास्थ्य की कुंजी है, बल्कि आत्म-साक्षात्कार का मार्ग भी है। योग हमें सिखाता है कि मन को संयमित किए बिना साधना अधूरी है। इसलिए कहा जा सकता है कि योग केवल शरीर को लचीला बनाने का साधन नहीं, बल्कि जीवन को संतुलित और दिव्य बनाने की कला है। नववर्ष-2026 की मंगल बेला पर हम संकल्पित होकर योग साधना की ओर सतत प्रयत्नशील हों, तभी सही मायने में जीवन में शांति, आनंद और मधुरता का संगम होगा। ■

अध्यात्म ज्ञान सभी धर्मों का मूल-स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद को आधुनिक युग में युवाओं का प्रेरणास्रोत एवं युग प्रवर्तक महापुरुष के रूप में पूरी दुनिया में जाना जाता है। उनका अवतरण 12 जनवरी सन् 1883 को महानगरी कोलकाता में हुआ। उस समय हमारे देश पर अंग्रेजों का शासन था। ऐसे प्रतिकूल समय में भी स्वामी विवेकानंद ने अपने गुरु महाराज से आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त किया और उसका प्रचार-प्रसार करके पूरी दुनिया को दिखा दिया कि भारत की आध्यात्मिक विरासत बहुत महान है और उसके आगे दुनिया के सारे देशों के सांस्कृतिक एवं धार्मिक सिद्धांत बौने सिद्ध होते हैं। उन्होंने अमेरिका के शिकागो शहर में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय धर्म सम्मेलन में ऐसा ऐतिहासिक और ओजस्वी व्याख्यान दिया जिसकी गूँज आज तक मानव हृदय को उद्वेलित कर रही है और बड़ी आशा भरी दृष्टि से लोग भारत की ओर निहार रहे हैं।

स्वामी विवेकानंद ने युवावस्था में ही दुनिया को आध्यात्मिक मार्ग पर अग्रसर होने की प्रेरणा दी। यही कारण है कि आध्यात्मिक मार्गदर्शन के लिए दुनिया के लोग आज भी भारत भूमि की तरफ खिंचे चले आते हैं। उन्होंने लोगों को समझाया कि भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही दृष्टि से अपना विकास करना मनुष्य का प्रमुख कर्तव्य है तथा इसकी पूर्ति युवा अवस्था में बड़ी आसानी से की जा सकती है। उन्होंने लोगों को इस ऊहापोह से भी बाहर निकाला कि आध्यात्मिक उत्थान की साधना केवल बुढ़ापे में ही की जाती है। उनके अनुसार युवावस्था ही जीवन की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति में सहयोगी होती है और सभी को जीवन में शाश्वत सुख-शांति को पाने का प्रयास भी युवा अवस्था में ही करना चाहिए।

यही वजह है कि हमारे देश में स्वामी विवेकानंद का जन्मदिन **“राष्ट्रीय युवा दिवस”** के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने भारत के सनातन सिद्धांत, वेदांत-दर्शन और अलौकिक आध्यात्मिक साधना को पूरी मानवता की रक्षा के लिए एक वरदान माना और भारत के साथ-साथ अन्य देशों में भी उन्हें स्थापित किया। उनके ये विचार और आदर्श युवाओं में नयी शक्ति और ऊर्जा का संचार कर सकते हैं तथा उनके लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकते हैं।

हम जानते हैं कि किसी भी देश के युवा ही उसका भविष्य होते हैं। उन्हीं के हाथों में देश की उन्नति की बागडोर होती है। आज के परिवेश में जहाँ चारों तरफ भ्रष्टाचार, बुराई और अपराध का बोलवाला है, जो घुन बनकर देश को अंदर ही अंदर खाये जा रहे हैं, ऐसे में देश की युवा शक्ति को जागृत करना और उन्हें देश के प्रति कर्तव्यों का बोध कराना अत्यंत आवश्यक है। स्वामी विवेकानंद जी के विचारों में वह क्रांति और तेज है जो युवाओं में नयी चेतना और सकारात्मक विचारों का संचार कर दे। उन्होंने भारत की सुषुप्त चेतना को जगाया और उसमें नयी ऊर्जा व उत्साह का संचार किया। उन्होंने युवाओं से अहंकार को छोड़ने का



स्वामी विवेकानंद जयन्ती पर विशेष

आग्रह करते हुए कहा कि यदि जीवन में सफल होना चाहते हो तो पहले अपने अहं को समाप्त करो।

स्वामी विवेकानंद ने युवाओं को धैर्य, व्यवहार में शुद्धता रखने, आपस में न झगड़ने, पक्षपात न करने और हमेशा उच्च आदर्शों की उपलब्धि के लिए संघर्षरत रहने का संदेश दिया। स्वामी विवेकानंद जी ने अपने व्याख्यानों से भारतीय संस्कृति और धर्म के कलेवर में नव चैतन्य का संचार किया था। अपने अल्प जीवन में उन्होंने ऐसे धर्म निरपेक्ष राष्ट्र और प्रगतिशील समाज की परिकल्पना की थी, जिसमें बिना किसी भेदभाव के सबके कल्याण व उत्थान का मार्ग प्रशस्त हो। स्वामी विवेकानंद ने **‘उत्तिष्ठत् जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत्’** का उद्धोष करते हुए लोगों को मोह-माया की नींद से जागने और श्रेष्ठ महापुरुषों के सानिध्य में ज्ञान प्राप्ति के लक्ष्य को प्राप्त करने की प्रेरणा दी। उन्होंने अध्यात्म ज्ञान को सभी धर्मों का मूल मानते हुए विभिन्न धर्मों में शांति व एकत्व की अवधारणा को स्वीकार किया। उनकी पावन जयंती पर हम सब उनको शत-शत नमन करते हैं तथा उनके आध्यात्मिक संदेशों एवं आदर्शों को जीवन में अपनाने का संकल्प लेते हैं। ■

श्री हंस जी महाराज का ज्ञान प्रचार का प्रारंभिक काल

यो गिराज परमसंत सद्गुरुदेव श्री हंस जी महाराज अपने सद्गुरुदेव जी महाराज स्वामी श्री स्वरूपानंद जी महाराज के आदेशानुसार अध्यात्म ज्ञान के प्रचार में लग गए।

श्री महाराज जी अक्सर कहते थे कि मुझे तो गुरु महाराज जी ने प्रभु नाम का अखण्ड खजाना दे दिया है, उनकी आज्ञानुसार लोगों को बांटता रहूंगा; जितना बांटूंगा, यह उतना ही बढ़ता रहेगा। वे कहते थे कि गुरुवाई कोई मारवाड़ी की दुकान या कोई राजगद्दी नहीं है जो चाहे, जिसको दे दी जाए या वोट लेकर इस पर कोई बैठ जाए। यह तो रूहानी ज्ञान है? श्री महाराज जी कहते थे कि जिसका मन पूर्ण रूप से गुरु महाराज जी के वचन में लग गया है और जो शिष्य सेवा करते-करते अपने आपको भूल चुका है, जिसका मैं का छिलका गल गया है, वही गुरु-ज्ञान का हकदार है और उसी में रूहानियत प्रकट होती है। केवल गुरु-गद्दी में बैठने से कोई भी रूहानियत का हकदार नहीं बन सकता है, वह बाहरी सम्पत्ति पर भले ही अधिकार जमा ले; लेकिन भीतरी रूहानी बादशाहत तो उसी शिष्य-सेवक को मिलती है, जिसकी गुरु की मति में मति मिल जाए। इसलिए तो कबीर साहब ने कहा कि-

गुरु शिष्य एक मति, मति में मति मिल जाए।

श्री महाराज जी का प्रादुर्भाव केवल जीव उद्धार के लिए ही हुआ था। मानव मात्र को सच्ची भक्ति में लगाकर उन्हें त्रितापों से मुक्त करना ही उनके जीवन का उद्देश्य था। **“तुम्हारा जन्म करोड़ों जीवों की भलाई के लिए ही हुआ है”** गुरुदेव श्री स्वामी स्वरूपानंद जी के ये शब्द सदैव उनकी अंतरात्मा में

गुंजायमान होते रहते थे। वे एक वट वृक्ष के समान थे, जिसकी छत्रछाया में अनंत जीवों ने सुख पाया। वे एक चलते-फिरते प्रयागराज थे। जिसमें नहाकर अनंत जीव पुनीत हो गए तथा

उनसे अध्यात्म ज्ञान प्राप्त कर प्रभु नाम स्मरण में लग गए।

श्री सद्गुरु महाराज से ज्ञान प्राप्ति के पश्चात श्री महाराज जी दिन-रात उसके प्रचार में जुट गए। प्रारंभिक वर्षों में उनका प्रचार क्षेत्र अविभाजित भारत का सिंध और लाहौर था। गुरु नानकदेव की तरह इस क्षेत्र में श्री महाराज जी ने सभी जातियों के लोगों को प्रभु के सच्चे नाम और परम प्रकाश का व्यावहारिक बोध कराया। श्री महाराज जी तो भ्रमण ही करते रहते थे और यह प्रेमीभक्तों का सौभाग्य होता था कि उन्हें अकस्मात दर्शन हो जाएं, क्योंकि उन दिनों श्री महाराज जी का कोई विशेष स्थान या पता नहीं होता था, बल्कि प्रेमीभक्तों से जब यह पूछा जाता था कि ये कहां रहते हैं, तो प्रेमी कहते थे कि ये सबके हृदय में रहते हैं। श्री महाराज जी को भक्त जहां बुलाते थे या याद करते थे, वे वहीं चले जाते थे। 1935 के पश्चात श्री महाराज

जी दिल्ली, उत्तर प्रदेश और राजस्थान में प्रचार करने लगे। संयोगवश श्री महाराज जी ने लाहौर व सिंध के पश्चात दिल्ली को ही सर्वप्रथम अपना प्रचार का केंद्र बनाया।

उन दिनों गिने-चुने प्रेमीभक्त होते थे और उन्हें श्री महाराज जी का बड़ा सानिध्य प्राप्त हुआ। श्री महाराज जी की दयालुता व संरक्षण को प्राप्त कर वे लोग धन्य हो जाते थे और श्री महाराज जी उनकी वैसी ही रक्षा करते थे, जैसे एक मां अपने बच्चे की रक्षा करती है। भक्तों को वे सुनाया करते थे कि भक्त



दो प्रकार के होते हैं- एक बंदरी के बच्चे की तरह, जिसे बिल्ली अपने मुंह में लिए घूमती रहती है और सात घरों को बदलती है। सात घर, सात चक्र हैं, जहां गुरु महाराज जी अपनी कृपा से उस भक्त को जो बिल्ली के बच्चे की तरह शरणागत होता है, घुमाते हुए सत्यलोक में पहुँचा देते हैं, जिस सत्यलोक के लिए माला फेरने वाले भूः भुवः स्वः रटते हैं। पर जब तक सुरति वहां नहीं पहुँचेगी, तब तक चौरासी से छूट नहीं सकते। सुरति के पिण्ड में उतर आने के कारण ही चौरासी में भ्रमण कर रहे हैं। अंतरमुखी सुरति न होकर बहिर्मुखी होने के कारण स्त्री, पुत्र, धन और मकानों का ही चिंतन करती है और यही कारण है कि चौरासी से नहीं छूट सकते। जिस प्रकार पानी नदी-नालों में बहता हुआ समुद्र में जाने के बाद स्थिर हो जाता है अर्थात् बहना बंद हो जाता है। इसी प्रकार जहां सूर्य, चंद्रमा और अग्नि की रोशनी नहीं है, जहां जाकर जीव वापस नहीं लौटता, वहां सुरति पहुँच जाएगी, तब पुनर्जन्म नहीं होगा; परंतु ऐसा कब होगा? जब बिल्ली के बच्चे की तरह गुरु की शरणागत होंगे, पर उस कौवे के बच्चे की तरह नहीं जो अपने को समझदार समझे और गुरु की बात को न मानकर मनमानी करे।

श्री हंस जी महाराज का व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली था कि जो भी उनके पास आया, वह उन्हीं का होकर रह गया। उनका सत्संग सीधा हृदय को छूने वाला होता था। प्रत्यक्ष को प्रमाण की क्या आवश्यकता है! जब स्वयं ज्ञानमूर्ति गुरुदेव समक्ष हों, तो फिर बौद्धिक तर्क और चतुराई किस काम की है! जब दिल्ली क्लॉथ मिल के मजदूर व कर्मचारी आश्चर्य से उनसे पूछा करते थे कि क्या श्री महाराज जी, हम जैसे मजदूर भी भगवान के दर्शन कर सकते हैं? हमने तो सुना है कि भगवान की प्राप्ति के लिए बड़ा तप करना पड़ता है, घर-बार छोड़कर जंगल में जाना पड़ता है, तो महाराज जी कहते थे कि नहीं, तुम भगवान का भजन हर स्थिति में कर सकते हो। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को यही तो उपदेश दिया- **“तस्मात् सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युद्ध च।”** अर्थात् निरंतर सब काल में, मेरा सुमिरन भी कर और युद्ध भी कर। युद्ध से ज्यादा कठिन काम तो और संसार में नहीं है। उसमें अपना भी बचाव करना पड़ता है, दुश्मन से भी लड़ना पड़ता है, अगर उस स्थिति में भी भगवान कृष्ण अर्जुन को भजन करने के लिए कहते हैं, तो तुम साधारण पारिवारिक कार्यों को या दिल्ली क्लॉथ मिल की ड्यूटी करते हुए भजन क्यों नहीं कर सकते हो, जबकि गुरु नानकदेव जी ने कहा कि उठते, बैठते, सोते, जागते जो प्रभु का नाम सुमिरण करता है, उसके सभी काम सफल हो जाते हैं।

ऊठत बैठत सोबत जागत नाम।

कह नानक सद भए तिनके काम॥

तुम उस सच्चे नाम को नहीं जानते हो। तुम उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते हो; क्योंकि वह कल्पनातीत है। लेकिन जब तुम गुरु महाराज जी की कृपा से उसे जान जाओगे, तब तुम स्वयं ही कहोगे कि इसका निरंतर सुमिरण हो सकता है। श्री महाराज जी के इन वचनों को सुनकर उनमें एक आत्मविश्वास पैदा होता था कि वे भी प्राचीन भक्तों की तरह संसार के कार्यों को करते हुए प्रभु भक्ति कर सकते हैं। श्री महाराज जी उन प्रेमियों के साथ खेलते थे, नहाते थे, बात करते थे, उनके सुख-दुःख के साथी थे और किसी भी प्रकार की समस्या हो, तो प्रेमी उन्हीं से निर्देशन लेकर उनकी आज्ञानुकूल अपने जीवन की कठिनाइयों को पार करते हुए दृढ़ता से सत्य मार्ग पर आरुढ़ रहते थे। अध्यात्म के गूढ़ रहस्य को महाराज जी साधारण और सामान्य भाषा में उन प्रेमीभक्तों को समझाते थे। दार्शनिक और शास्त्रीय मतों से उनकी बुद्धि को बोझिल न करके उन्हें जनभाषा में, उन्हीं की भाषा में और उन्हीं के मुहावरे में समझाते थे। अध्यात्म और सांसारिक जीवन का समन्वय ही जीवन को उत्कृष्ट बनाता है। वे एक-दूसरे के विरोधी न होकर एक दूसरे के सहायक हैं। उनके दृष्टांत और कथाएं जिसके द्वारा वे अपनी बात को प्रेमीभक्तों को समझाना चाहते थे, बड़े सीधे व सरल होते थे। साधारण से साधारण अनपढ़ व्यक्ति भी उनकी बोली और दृष्टांत को समझ जाता था। कई बार अगर कोई वक्ता बड़े शास्त्रीय व बौद्धिक ढंग से बोलकर अपनी विद्वत्ता को दिखाना चाहता था, तो महाराज जी कहा करते थे- ऐ विद्वान जी! क्या भगवान विद्वत्ता के अधीन हैं? तुम्हारे बोलने का क्या फायदा जब सुनने वाले समझ नहीं सकते! संत तो उस बोली में बोलते हैं, जिसको साधारण से साधारण व्यक्ति भी समझ सके। भक्ति विद्वत्ता के अधीन नहीं है। भक्ति में योग, यज्ञ, पाठ-पूजा नहीं करना पड़ता। भक्ति स्वतंत्र होते हुए भी बिना सत्संग के मिल नहीं सकती। मान लो लिखा-पढ़ा, वेदांती या षटशास्त्री ही भक्ति कर सके, तो अनपढ़ मनुष्य भक्ति से वंचित रह जायेगा, फिर भक्ति स्वतंत्र तो नहीं हुई। रूपवान भक्ति कर सके, तो बदसूरत रह गया, ऊँची जाति वाला ही भक्ति कर सके, तो छोटी जाति के मनुष्य भक्ति के बिना रह जावें। जैसे आजकल ऊँची जाति के लोग छोटी जाति के लोगों को मंदिरों में नहीं जाने देते। यदि मंदिरों के जाने में ही भक्ति होती, तो छोटी जाति वाले तो भक्ति से वंचित रह जावें। पर, भगवान राम ने त्रेता युग में भी किसी राजा, धनवान के यहां न जाकर दीन-गरीब भिलनी की कुटिया पर जाकर जूठे बेरों का भोग लगाया। भिलनी तो न खूबसूरत थी, न लिखी-पढ़ी और न ही ऊँची जाति की थी। परंतु भक्त-वत्सल भगवान ने भक्ति के प्रभाव से स्वयं जाकर दर्शन देकर कृतार्थ किया। बूढ़ा या

जवान ही भक्ति कर सके, तो ध्रुव और प्रह्लाद ने बाल अवस्था में ही भगवान का दर्शन किया, बिरला जैसे दान देकर या ऊँचे-ऊँचे मंदिर बनाकर भक्ति कर सकें, तो गरीब मजदूर भक्ति से वंचित रह जावें। मान लो, हिन्दुस्तान के लोग ही भक्ति कर सकें, तो इंग्लैण्ड, अमेरिका, रूस, अफ्रीका और चीन आदि देश भक्ति से रह जावें। कहने का भाव यह है कि भक्ति किसी देश, जाति, कुल, विद्या, गुण, धन, बल और आयु के अधीन नहीं है और जो ऐसा समझता है, वह भक्ति को नहीं जानता। लूला, लंगड़ा, अंधा, रोगी, स्त्री-पुरुष, हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई सभी भक्ति करने के अधिकारी हैं। आज संसार के लोग सच्ची भक्ति को न जानकर मनमानी भक्ति में लगे हुए हैं। इसीलिए भक्ति के करने में एकता नजर नहीं आती। फल-फल, जल चढ़ाने, पूजा करने, तीर्थ-व्रत करने, मक्का-मदीना, बद्रीनारायण जाने, यज्ञ हवन करने और तंत्र-मंत्र जपने में लोग भक्ति समझते हैं, पर यह भक्ति नहीं है। गीता में तो भक्ति को जानने के लिए तत्त्वदर्शी और ज्ञानी महापुरुष की शरण में जाकर दण्डवत प्रणाम तथा सेवा द्वारा उनकी आत्मा को प्रसन्न करके विनयभाव से पूछने के लिए कहा है। संसार के लोग जिस भक्ति में लगे हुए हैं, यदि यही भक्ति होती तो फिर सद्गुरु की शरण में जाने की क्या जरूरत थी? भक्ति तो सद्गुरु से पूछने और तन, मन और धन से सेवा करने से ही मिलती है।

गुरु दीक्षा भारत की वैदिक संस्कृति का एक सर्वोत्तम लक्षण है। वैदिक संस्कृति हिन्दू संस्कृति और भारतीय संस्कृति का राग अलापने वाले लोग यह नहीं जानते कि इस संस्कृति की आधारशिला ब्रह्मनिष्ठ और श्रोत्रिय गुरु पर आधारित है। जैसे प्लेटो की आदर्श राज्य की कल्पना एक फिलोस्फर किंग के बिना पूर्ण नहीं होती, ऐसे ही वैदिक संस्कृति का प्रस्फुटन मानव के हृदय में गुरु दीक्षा के बीजारोपण से शुरू होता है। वैदिक संस्कृति या हिन्दू संस्कृति इतनी दूर-दर्शिता लिए हुए है और आत्मा की अनश्वरता पर आधारित है। सोलह प्रकार के संस्कारों से व्यक्ति के जीवन को ऊर्ध्वमुखी बनाकर वह हर जीव को, जो मनुष्य योनि में है, उसे मोक्ष के पथ पर अग्रसर करती है। धर्म वह शाश्वत तत्व है जो जीवन पहले क्या था, जीवन अब क्या है और आगे क्या होगा, तीनों को संयोजित और नियंत्रित करता है। इसलिए गुरु को त्रिकालदर्शी कहा गया है, क्योंकि वह जानता है कि जीव किस कर्म-पुंज को लेकर के इस मनुष्य जन्म में आया है और इस मनुष्य जन्म में उसकी संभावनाएं क्या हैं, अपने प्रारब्ध को भोगते हुए वह कैसे परमात्मा की प्राप्ति के लिए कर्मशील हो सकता है, इसी योग की युक्ति को जो बताए, वही वास्तविक गुरु होता है। जो स्वयं ब्रह्मनिष्ठ नहीं है, जो स्वयं उस योग में आरुढ़ नहीं है, उसे जानता नहीं है, वह

दूसरों को कैसे इस परमार्थ के पथ पर चला सकता है?

श्री महाराज जी उदाहरण दिया करते थे कि अरे, मान लो मुझे अंग्रेजी सीखनी है और मैं दो व्यक्तियों के पास जाता हूँ- एक तो अंग्रेजी स्वयं जानता है और एक नहीं जानता है, तो तुम ही बताओ कि मुझे अंग्रेजी कौन सिखा सकता है? अरे, जब तुम्हारे आचार्य, शास्त्री, मंडलेश्वर और महामंडलेश्वर खुद ही उस प्रभु के नाम को और प्रकाश को नहीं जानते हैं और न उन्होंने देखा है, तो वे तुम्हें कैसे जना देंगे और कैसे दिखा देंगे? इसलिए भाई, पहले खुद जानना पड़ता है, ध्यान करना पड़ता है और फिर तुम गुरु कृपा से दूसरों को भी जना सकते हो। देखो, कहते भी हैं-

पहले दाता शिष्य भया जिन तन तन अरपा शीश।

पीछे दाता गुरु भया जिन नाम दिया बख्शीश।।

हमारे शास्त्रों में लिखा है कि ये दो आंखें जिन्हें चर्म चक्षु कहते हैं, इनसे तो हम सारे संसार को देख सकते हैं, लेकिन इन आंखों के द्वारा हम उस परमात्मा को, परम शक्ति को जो सारे ब्रह्मांड में व्याप्त है, नहीं देख सकते हैं। यदि किसी ने आज तक इन आंखों से उस सर्वव्यापी सत्ता को देखा हो या जाना हो तो बताओ कौन है वह? नहीं भाई, उसके लिए तो एक और ही नेत्र है, जिसे तीसरा नेत्र, शिव नेत्र, ज्ञान नेत्र या दिव्य नेत्र कहा गया है, जिससे भगवान के विराटस्वरूप को देखा जा सकता है। देखो, भगवान कृष्ण और अर्जुन तो इकट्ठे पास-पास रहते थे। अर्जुन हर रोज उनको इन बाहरी आंखों से देखता था, क्योंकि वह तो उनका सखा ही था, किंतु फिर भी भगवान कृष्ण अर्जुन को कहते हैं कि मेरे इस निराकार स्वरूप को इन आंखों से नहीं देख सकता। इसके लिए मैं तुझे दिव्य नेत्र देता हूँ और तू उस दिव्य नेत्र के द्वारा मेरे उस विराट रूप को देख। तो अर्जुन ने सभी भूत-प्राणियों को उस विराट स्वरूप में पिरोया हुआ, समाया हुआ देखा। वह दिव्य नेत्र तो सभी के पास है, बाहरी नेत्र तो भले ही किसी के पास न हों, लेकिन देखो, भगवान की अनुकंपा है कि उसने सब मनुष्यों को दिव्य नेत्र दिया हुआ है, लेकिन अज्ञान की वजह से वह ज्ञान नेत्र बंद है। जैसे बादलों से जब सूर्य आच्छादित हो जाता है, तो सूर्य दिखाई नहीं देता, ऐसे ही उस ज्ञान नेत्र के बंद होने के कारण हमें घट-घट में व्याप्त प्रभु का वह जलवा दिखाई नहीं देता। संत तुलसी साहिब जी ने कहा है-

घट में है सूझे नहीं, लानत ऐसी जिंद।

तुलसी या संसार को, भयो मोतियाबिंद।।

जैसे बाहरी मोतियाबिंद को दूर करने के लिए 'डॉक्टर के पास जाना पड़ता है, ऐसे ही अन्दर के मोतियाबिंद को दूर करने के लिए गुरु की आवश्यकता है। ■

सांचा शब्द गुरुदेव का, पर्दे में पहचान

परमसंत सद्गुरुदेव श्री हंस जी महाराज

प्रेमी सज्जनों! अभी आपने संत कबीरदास जी का पद सुना। कबीरदास जी कहते हैं कि जीव! तूने भगवान के भजन के बिना हीरे जैसा अमूल्य जन्म व्यर्थ ही गंवा दिया। जीव माया में फँसकर मनुष्य शरीर की कदर को भूल जाता है। वह न तो संतों की शरण में जाकर कल्याण करने वाली भक्ति को पूछता है और न कभी मन में हरि नाम-सुमिरण करने का विचार करता है। वह दिन-रात माया को पाने के लिए ही जुटा रहता है।

जीव अपने सच्चे जीवन-साथी भगवान को भूलकर संसार को रिझाने में अपना सारा समय गंवा देता है। यह संसार सेमल के फूल की तरह बताया है। सेमल के फूलों की सुन्दरता को देखकर तोता इस आस से डाली पर आ बैठता है कि यह फल पकने पर खाऊँगा, परन्तु जब सेमल के डोडे को चोंच मारकर देखता है, तो उसमें से रूई निकलने पर सिर धुन-धुनकर पछताता है। इसी प्रकार जीवरूपी तोता संसाररूपी वृक्ष पर बैठकर विषयरूपी फलों में सुख-शान्ति की इच्छा करता रहता है। जब विषयों में दुःख-ही-दुःख मिलता है तो पछताता है और रोता है, परन्तु

अब पछताये होत क्या,

जब चिड़िया चुग गयी खेत।

खेत को जब चिड़ियों ने चुग लिया तो रखवाली करने से या पछताने से लाभ ही क्या? जब मनुष्य शरीर को भजन के बिना बिता दिया, तो अफसोस करने या पछताने से गई आयु वापस लौटकर तो नहीं आती। संत कबीरदास जी का कहना

है कि संसार एक दुकान है, जिसमें सभी लोग माल खरीदने और बेचने को आये हैं। जिसने परमात्मा का भजन किया है, उसने तो अपना माल चौगुना कर लिया है, परन्तु जो संसार के नाशवान पदार्थों को पाने की



इच्छा करता है, उसने पूँजी को अर्थात् मनुष्य जन्म को गंवाया ही है। जो भजन नहीं करेगा, उसका यह जन्म भी व्यर्थ चला जायेगा और मरने के बाद उसे चौरासी में जाना पड़ेगा। गुरु नानकदेव जी कहते हैं-

लख चौरासी भरम दिया,

मानुष जन्म पायो।

‘नानक’ नाम संभाल,

सो दिन नेडे आयो।

लख चौरासी में भ्रमते-भ्रमते भगवान की कृपा से यह मनुष्य जन्म मिला है। समय धीरे-धीरे बीत रहा है, इसलिए भगवान के नाम का सुमिरण करो। संसार माया का लोभी है और यहां पर सब लोग

ममतारूपी महल को मजबूत बनाने में लगे हुए हैं। सब माया के कारण ही प्यार करते हैं और मोह के कारण ही मनुष्य माया को जमा करने में लगा रहता है। कोई बिरला ही माया-मोहरूपी भूल-भुलैया के महल को तोड़कर बाहर निकलता है, अन्यथा सब उसी में फँसे रहते हैं। बड़े-बड़े बादशाह और सेठ-साहूकार हमारे देखते-देखते संसार से कूच कर गये और भी अनेक लोग धीरे-धीरे चले जा रहे हैं। आखिर वे अपने साथ क्या ले गये? कहने का भाव यह है कि संसार की माया में फँसकर कुछ भी हाथ नहीं लगेगा और अन्त में पछताना ही पड़ेगा। भगवान की भक्ति के लिए यह मनुष्य तन मिला है, इसलिए भक्ति करो। संत कहते हैं-

उठ जाग क्या सुख सोया रे,

काया गढ़ के निवासी।

काया रूपी किले में निवास करने वाले जीव! उठ, जाग और मोह की निद्रा को त्यागकर देख! तेरी पूँजी को पाँच ठग दिन-रात लूट रहे हैं। इसलिए, जागकर भगवान के भजन में लग जा। भजन में कहा है-

सुमिरण बिन गोता खावेगा।

क्या लेकर तू आया जगत में,

क्या लेकर तू जावेगा।

बिन सत्नाम के नर्क पड़ेगा,

फिर चौरासी जावेगा।

विचार करो कि तुम इस संसार में माता के गर्भ से क्या लेकर आये थे और मरते समय संसार की कौन-सी चीज लेकर जाओगे। अमृत नाम का सुमिरण किये बिना तो चौरासी में ही जाना पड़ेगा, फिर

पछताने से क्या बनेगा। जैसे नदी में डूबने वाला कभी नीचे और कभी ऊपर गोते खाता रहता है, ऐसे ही जन्म-मरण के गोते खाने पड़ेंगे। संत तुलसीदास जी कहते हैं-

जिन्ह हरिकथा सुनी नहीं काना।
श्रवन रंघ अहिभवन समाना॥
नयनन्हि संत दरस नहीं देखा।
लोचन मोरपंख कर लेखा॥
ते सिर कटु तुंबरि समतूला।
जे न नमत हरि गुरु पद मूला॥
जो नहीं करइ राम गुन गाना।
जीह सो दादुर जीह समाना॥

जिसने मनुष्य तन पाकर इन कानों से हरि की कथा या चर्चा नहीं सुनी, उसके कान सर्पों के बिल के समान हैं, जिसने इन नेत्रों से सन्तों का दर्शन नहीं किया उसकी आँखें मोरपंख के समान हैं, जो सिर श्री सद्गुरु और सन्तों के चरणों में नहीं झुकता, वह सिर कड़वी तूम्बी के समान है। जिस जिह्वा से राम के गुण नहीं गाये जाते, उसका जो कुछ भी कहना है, वह मेढक की टर्-टर् से अधिक नहीं है। हाथ दान देने को और पैर सत्संग में जाने को मिले हैं। कहने का भाव यह है कि मनुष्य जीवन परमात्मा को पाने के लिए मिला है। परमात्मा लिखने-पढ़ने या विद्या-चातुरी से नहीं मिलते। भगवान तो भक्ति और भाव के भूखे हैं। भगवान ऊँच-नीच को नहीं देखते, वह तो भक्त के हृदय की भावना को देखते हैं कि इसके हृदय में कितनी जगह है।

एक समय नामदेव जी ने रोटी बनाकर रखी, इतने में एक कुत्ता आया और सब रोटियों को उठाकर भाग निकला। नामदेव जी घी की कटोरी को लेकर पीछे-पीछे भागे और कहा- भगवान! रूखी रोटी से तुम्हारा गला छिल जायेगा; लाओ! रोटियों को चुपड़ दूँ। एकान्त देखकर भगवान ने नामदेव जी को दर्शन दिये, इस पर भी नामदेव जी से

कहा- नामदेव! तुम गुरु की शरण जाओ, तभी तुमको ज्ञान होगा। नामदेव ने भगवान की आज्ञा मानकर गुरु की शरण लेकर ज्ञान की प्राप्ति की तथा जीवन के परम ध्येय को हासिल किया।

आज कोई कान फाड़ने में, जटा बढ़ाने में, भगवा रंगाने में अथवा दण्ड धारण करने में, कोई गीता-मन्दिर, शिवालय बनवाने में, कोई तीर्थों पर जाकर नहाने में, कोई माला फेरने में, दान देने और पूजा-पाठ करने में कल्याण समझते हैं, पर कल्याण इन बातों

सेमल के फूलों की सुन्दरता को देखकर तोता इस आस से डाली पर आ बैठता है कि यह फल पकने पर खाऊँगा, परन्तु जब सेमल के डोडे को चोंच मारकर देखता है, तो उसमें से रूई निकलने पर सिर धुन-धुनकर पछताता है। इसी प्रकार जीवरूपी तोता संसाररूपी वृक्ष पर बैठकर विषयरूपी फलों में सुख-शान्ति की इच्छा करता रहता है। जब विषयों में दुःख-ही-दुःख मिलता है तो पछताता है और रोता है।

से नहीं होगा।

हिन्दू, मुसलमान, ईसाई और सिख आदि सभी एक परमात्मा के बनाये हुए हैं। किसी से पूछो तो सभी यही कहेंगे कि हमारा बनाने वाला मालिक एक ही परमात्मा या खुदा है। जब सबका स्वामी एक है, तो उसका नाम भी सबके लिए एक है, परन्तु आज संसार सच्चे नाम को भूलकर ही एक-दूसरे से लड़ रहा है। इन सभी नामों को तो एक बच्चा भी दो या तीन साल का होने पर कहना सीख जाता है। क्या जब हम राम, कृष्ण, ऊँ, खुदा, अल्लाह, गॉड कहना नहीं सीखे, उस समय हमारे लिए भगवान था ही नहीं? आखिर माता के गर्भ में जपने वाले नाम को भी जानना चाहिए, जिसके लिए सब संत-महात्मा कहते हैं कि

वह नाम सोलह स्वर, छत्तीस व्यंजनों से परे है। वह नाम चाहे कोई जाने या न जाने, परन्तु वह नाम सबके हृदय में है। उस नाम को गुरु के बिना जान भी नहीं सकते।

तन्त्र मन्त्र सब झूठ है,
मत भरमो संसार।
सार शब्द जाने बिना,
कोई न उतरसी पार॥
शब्द बिना सुरति आन्धरी,
कहो कहाँ को जाय।
द्वार न पावे शब्द का,
फिर फिर भटका खाय॥

संत कबीरदास जी कहते हैं कि यदि तुम्हें अपने तन्त्र-मन्त्रों पर अभिमान है, तो तुम ही बताओ कि इनको जपते हुए तुम्हारी सुरती (ख्याल) कहाँ रहती है। जब मन टिकता ही नहीं, तो फिर स्मरण या भक्ति भी नहीं हो सकती। ये सब तन्त्र-मन्त्र झूठे हैं, मानो या न मानो। भक्ति मार्ग में किसी की बुद्धि या चतुराई नहीं चल सकती। जैसे हाथी अंकुश से काबू में आता है, ऐसे ही मन अन्दर के शब्द से, भगवान के नाम

सुमिरण से काबू में आता है।

ओंकार निश्चय भया,
सो कर्ता मत जान।
साँचा शब्द गुरुदेव का,
पदों में पहचान॥

गुरु महाराज का वह शब्द पदों में जाना जाता है। कई आदमी सबके सामने पूछते हैं और कहते हैं कि हमें वह शब्द या नाम क्यों नहीं बताते? परन्तु वह नाम तो हृदय में है, बाहर कैसे बताया जावे। भगवान सत्-चित्-आनन्दस्वरूप (सच्चिदानन्दस्वरूप) है, तो उनका नाम भी सत्-चित् तथा आनन्द का देने वाला है। जब इन नामों से आनन्द की प्राप्ति नहीं होती, तो यह आनन्ददायक है भी नहीं।

जासु नाम सुमिरत इक बारा।

नर उतरहिं भव सिन्धु अपारा।।

तुलसीदास जी कहते हैं कि उस नाम को एक बार स्मरण करके जीव भवसागर से पार हो जाता है। इन नामों को तो सारी दुनिया गा रही है, क्या इनसे भला हो भी जायेगा?

सुमिरण सुरत लगाय के,

मुख ते कछु न बोल।

बाहर के पट देय कर,

अन्तर के पट खोल।।

वास्तव में न गुरु के बिना सत्यता का ज्ञान होता है और न ही गुरु के बिना मोक्ष मिलता है।

बलिहारी गुरु आपने,

देवाड़ी सत् बार।

जिन मानुष से देवता कियो,

करत न लागी बार।

जे सौ चन्दा उगवें,

सूरज चड़इ हजार।

ऐता चान्दन होंदियां,

गुरु बिन घोर अन्धार।।

कबीरदास कहते हैं-

गगन मण्डल के बीच में,

तहाँ झलके नूर।

निगुरा महल न पाईयाँ,

पहुँचेगा गुरु पूर।।

देखो, झूठी बातों में लगने से भला नहीं होगा। इसलिए सच्चे गुरु की शरण जाकर अन्दर के सच्चे प्रकाश को और अमृत नाम को प्राप्त करो और तन-मन-धन से सेवा करके उनकी आत्मा को प्रसन्न करके, अपने परलोक को सुधारो। इस संसार में सिकन्दर जैसे भी खाली चले गये, जिसने अनेक बादशाहों का खजाना जमा कर लिया था। फिर तुम ही क्या ले जा सकोगे, जो बिना भक्ति और सेवा के हीरे जैसा जन्म गँवा रहे हो। परमात्मा का भजन करके इसको सार्थक करो। यही कबीरदास जी का कहना है-

भजन बिना बावरे,

हीरा सा जन्म गँवाया।।

भगवान के जिस नाम का नींद और स्वप्न में भी सुमिरण हो सके, उस नाम को जानना चाहिए। जीव माता के गर्भ में जिस नाम को जपता है और बाहर आकर भूल जाता है, उस नाम को जानकर सुमिरण करो। गीता के अध्याय आठ, श्लोक सात में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन से उस नाम का सर्वकाल में सुमिरण करने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि अर्जुन तू लड़ाई

भगवान तो भक्ति और भाव के भूखे हैं। भगवान ऊँच-नीच को नहीं देखते, वह तो भक्त के हृदय की भावना को देखते हैं कि इसके हृदय में कितनी जगह है।

भी कर और सुमिरण भी कर। अब यह तो कोई कह ही नहीं सकता कि हम सुमिरण नहीं कर सकते। वह नाम सबके हृदय में है, जिसे हनुमान जी ने हृदय फाड़कर रोम-रोम में व्यापक बताया था। जब तक उस नाम को बताने वाला सद्गुरु नहीं मिलता, तब तक हृदय स्थित नाम को नहीं जान सकते। वह नाम सोलह स्वर छत्तीस व्यंजन से बाहर है, वह रचना में नहीं आता। भागवत में बताया है कि चार युगों की एक चौकड़ी होती है- सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग। ये चारों युग 43,20,000 वर्ष के होते हैं। ऐसी एक हजार चौकड़ी बीत जाने पर एक दिन और एक हजार चौकड़ी बीतने पर ब्रह्मा की एक रात होती है। ऐसे दिन-रात के हिसाब से ब्रह्मा की सौ साल की आयु होती है। उसके बाद ब्रह्मा भी लीन हो जाते हैं। ब्रह्मा के शान्त होने पर जो बचता है, उसी को बीज कहते हैं और मैं उसी बीज को जानने के लिए कहता हूँ। भगवान शिव माता पार्वती को समझाते हुए

कहते हैं-

उमा कहउँ मैं अनुभव अपना।

सत् हरि भजन जगत् सब सपना।।

यह सारा जगत् स्वप्न है, इसमें किया हुआ पूजा, पाठ, यज्ञ, हवन, दौड़-भाग सब स्वप्न में ही है। सच्चा तो एक परमात्मा के नाम का सुमिरण है, जो इस स्वप्न से बाहर है।

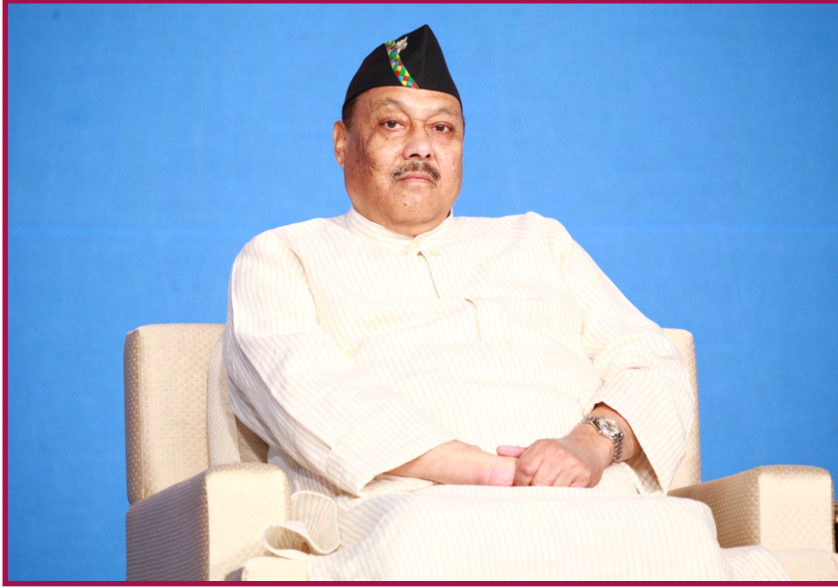
देखो, रावण के दस सिर और बीस हाथ थे। जब वह मरने लगा, तब भगवान श्री राम ने लक्ष्मण जी को नीति सीखने के लिए रावण के पास भेजा। रावण ने लक्ष्मण को बताया कि अच्छा कार्य तुरन्त करना चाहिए, उसे कल पर नहीं नहीं छोड़ना चाहिए और बुरा कार्य आगे के लिए छोड़ देना चाहिए। मेरी इच्छा थी कि स्वर्ग तक जाने के लिए सोने की सीढ़ी लगाऊँ और समुद्र का जो खारा जल है, उसे मीठा करूँ। केवल देवताओं को आज्ञा करने की देर थी, परन्तु मैं उस अच्छे कार्य को कल पर टालता रहा और जो बुरा काम था सीता माता को चुराना, वह कार्य तुरन्त कर डाला। उसका परिणाम निकला कि सोने की लंका जलकर खाक हो गई, सारा परिवार नष्ट हो गया और मैं मृत्यु शैया पर पड़ा हूँ।

अगर भगवान के सच्चे नाम को जानना उचित समझते हो, तो आज ही जानने का निश्चय करो, उसे कल पर मत छोड़ो और अगर बुरा समझते हो, तो कल पर अवश्य छोड़ देना। भगवान का सच्चा नाम ही मन को रोकने की सही युक्ति है और उसी का नाम योग है। उसी योग से परमात्मा के निकट पहुँच सकते हैं। जब तक इस योग को नहीं जानेंगे, तब तक दुःखों से छुटकारा नहीं मिलेगा। एक ओर अंधेरा तो दूसरी ओर उजाला। अन्धेरे में रहोगे, तो नाना प्रकार के दुःख भोगोगे और उजाले में रहोगे, तब सुख और आनंद की प्राप्ति होगी।

सत्संग से श्रद्धा-भाव की बैटरी चार्ज होती है

श्री भोले जी महाराज

प्रेमी सज्जनों! भौतिक शिक्षा प्राप्त करने के लिये हम स्कूल जाते हैं, हमें फीस जमा करानी पड़ती है और स्कूल की ड्रेस सिलवानी पड़ती है। यदि स्कूल की फीस समय पर नहीं देंगे, तो प्रधानाचार्य हमें स्कूल से निकाल देंगे। भगवान का ज्ञान जिससे हमारा कल्याण होगा, उसके बारे में लोग सोचते हैं कि वह हमें बिना प्रयास



के ऐसे ही मिल जाये। यदि आत्मज्ञानी संत-महापुरुष की सेवा किये बिना ज्ञान मिल भी जाये और उसके प्रति हमारे अंदर श्रद्धा-भाव नहीं हो, तो उस ज्ञान का हमें कोई लाभ नहीं मिल पायेगा।

जैसे किसान खेत की जुताई करके उसमें बीज डालता है। उसके बाद निराई-गुड़ाई करता है, उसमें खाद-पानी डालता है, तब कहीं जाकर उसमें अनाज पैदा होता है। वह खेत में समय-समय पर खाद डालेगा, पानी भी देगा, लेकिन यदि उस फसल की वह देखभाल नहीं करेगा, तो उसमें कीड़े भी लग सकते हैं, जिससे फसल नष्ट हो जायेगी और उसको कुछ भी नहीं मिलेगा। आप धान की पौध लगाते हैं, तो कितनी मेहनत के बाद आपको उसकी फसल मिलती है। इसी तरह से यदि हम ज्ञानी गुरु महाराज जी की सेवा नहीं करेंगे, तो हमको ज्ञान फलीभूत नहीं होगा। सेवा ही हमें भक्ति

मार्ग में लगाती है। सेवा से ही हम ज्ञान मार्ग में चल सकते हैं और सेवा से ही भजन में मन लगता है। सत्संग, सेवा

और भजन सभी के लिए बहुत जरूरी है। जितने प्रेम, श्रद्धा एवं भाव से हम गुरु महाराज की सेवा करेंगे, उससे हमें उतना ही अधिक लाभ मिलेगा।

जैसे कार की बैटरी डाउन हो जाती है, तो उसे चार्ज करवाना पड़ता है। इसी तरह से सत्संग से हमारे श्रद्धा भाव की बैटरी पुनः चार्ज हो जाती है। भक्त लोग कई बार माया से प्रभावित होकर ज्ञान के मार्ग को छोड़ देते हैं, उनको ज्ञान लेकर घर में नहीं बैठना चाहिए, बल्कि जगह-जगह सत्संग करना चाहिए। सत्संग में यदि हम बाई-महात्माओं का सहयोग नहीं करेंगे, तो ज्ञान-प्रचार का कार्य आगे नहीं बढ़ पायेगा।

जो ज्ञान हमें मिला है, उसमें हमें आगे बढ़ना है, उसका प्रचार भी करना है तथा बाई-महात्माओं को सहयोग देना है, ताकि और लोग भी इस ज्ञान को जानें। गुरु नानक देव जी कहते हैं कि जो

ज्ञान को जानकर स्वयं भजन करता है तथा दूसरों को भी इस मार्ग पर लगाता है, उसको मुक्ति अवश्य मिलती है। यह आत्मा का ज्ञान है, जो सबसे उत्तम, अजर और अविनाशी है।

एक बहेलिया कहीं जा रहा था। रास्ते में उसे साधु महाराज का एक आश्रम मिला, जिसमें एक तोता रहता था। वह बोल रहा था कि शिकारी आयेगा, जाल बिछायेगा, दाना डालेगा, फंसना मत। साधु ने बहेलिये से उस तोते

को ले जाने के लिए कहा, तो बहेलिया बोला कि महाराज, यह तोता आपका है। मैं इसे ले जाकर क्या करूंगा। जब यह तोता मेरे साथ जंगल में होगा और जाल बिछाकर दाना भी डालूंगा, तो कोई भी तोता मेरे हाथ नहीं आयेगा, क्योंकि यह तोता आपका सिखाया हुआ है। साधु ने कहा कि अरे! यह जो बोलता है, उसका मतलब यह कुछ नहीं जानता है। इतना कहकर साधु ने वह तोता छोड़ दिया और उड़ते हुये वह तोता कह रहा था कि शिकारी आयेगा, जाल बिछायेगा, दाना डालेगा, फंसना मत। बहेलिया जब जंगल में अपना जाल बिछाकर दाना डालकर बैठ गया, तो पहले वही तोता बोलता हुआ आया और उस जाल में फंस गया। कई लोग होते हैं, जो कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं, किंतु हमको वही बोलना चाहिए जो हम कर सकें।

भारत भूमि से ही देश-विदेश में ज्ञान का प्रकाश फैला है

माताश्री राजेश्वरी देवी

प्रेमी सज्जनों! गुरु महाराज जी ने जो ज्ञान दिया है, तुम उसका भजन करो, सुमिरण करो। देखो, अंत समय में सब कुछ तुम्हारा यहीं छूट जायेगा और यह जो ज्ञान है, अन्तिम क्षण तक तुम्हारे साथ रहेगा। ज्ञान को संतों ने सबसे बड़ा धन बताया। मैं देश-विदेश में बहुत जगह गई, सब शान्ति चाहते हैं, हर मनुष्य शान्ति चाहता है। हर मनुष्य कहता है कि मुझे शान्ति चाहिए। अगर पेट भर करके अन्न भी मिल जाये, तब भी मनुष्य असन्तुष्ट रहता है। बहुत से सम्पन्न देश हैं, जहां उनके जरूरत की पूरी चीजें उपलब्ध हैं, लेकिन फिर भी वहाँ के लोग बहुत अशान्त हैं, उनके मन में शान्ति नहीं है। मन की शान्ति के लिए वे भारत में ही आते हैं और ज्ञान की तलाश करते हैं।



इतिहास साक्षी है, धर्मशास्त्र साक्षी हैं कि हमेशा भारतभूमि ने ही महापुरुषों को जन्म दिया और इसी भूमि से देश-विदेश में ज्ञान का प्रकाश फैला। आज भारत के लोग अपनी पवित्र भूमि को भूल चुके हैं। इस भूमि में बहुत-सी चीजें बिना एयरकंडीशन के उगती रहती हैं। बहुत से ऐसे देश हैं, जहाँ कि बिना एयरकंडीशन के कुछ होता ही नहीं है और न ही वहाँ मनुष्य रह सकता है। मनुष्य के लिए कार एयरकंडीशन चाहिए, मकान एयरकंडीशन चाहिये, दफ्तर भी एयरकंडीशन चाहिए और

एयरपोर्ट भी एयरकंडीशन चाहिये। इस तरह से उन लोगों ने जीवन जीने के साधन बनाये हुए हैं। शरीर को आराम देने के साधन तो उन लोगों ने पूरे कर

लिये और उनसे पूछो कि तुम्हें मन की शान्ति है? तो कहते हैं कि मन हमारा बहुत अशान्त है। हम अभी तक शान्ति को प्राप्त नहीं हुए, हमें शांति की तलाश है। राकेटों के द्वारा लोग तीन-तीन, चार-चार महीना आकाश में रह रहे हैं, पर देखो, वहाँ मन की शान्ति नहीं है। आकाश से भी वे लोग हताश होकर आ जाते हैं। इसीलिए संतों ने बताया कि शान्ति तो अपने हृदय के अंदर है। सचमुच ही शान्ति नाम की कहीं कोई वस्तु नहीं है। सन्तों ने कहा कि वास्तव में शान्ति तो अपने हृदय में है। जब तक

उस रास्ते को नहीं अपनाओगे, तब तक शान्ति हो ही नहीं सकती। मैंने कलकत्ता के लोगों को कहा कि जब बांग्लादेश से लोग भाग-भाग कर आ रहे थे, तब भी मैं यहीं थी। उस समय कितनी बुरी दशा थी, किसी को यह पता नहीं था कि मनुष्य की ऐसी दशा होने वाली है। जब जीव मां के गर्भ में होता है, तब भी भगवान उसे पूरी खुराक पहुँचाता है। क्या बाहर आकर वह इतना निर्दयी बन चुका है, जो हमको कोई चीज नहीं देगा? पर देखो, वास्तव में मनुष्य का मन गन्दा हो गया है। मनुष्य माया और मोह में इतना वशीभूत हो गया है कि वह मानव को मानव नहीं समझता है। मनुष्य धीरे-धीरे राक्षस-वृत्ति को अपनाता जा रहा है। इस तरह से देश में शान्ति कैसे होगी? आज

संसार में हर मनुष्य दुःखी है, इसमें सुखी कोई नहीं है। न धनवान ही सुखी है और न निर्धन ही सुखी है। निर्धन तो सूखी रोटी खा सकता है, पर धनवान को तो खाने में स्वाद ही नहीं आयेगा। आखिर हमारी ऐसी गति कैसे हुई? जिन रास्तों से शान्ति को प्राप्त करना था, जिन संगठनों से हमको शान्ति प्राप्त होनी थी, उस मार्ग को हमने दूर छोड़ दिया। स्कूलों में बच्चों को अध्यात्म के बारे में नहीं पढ़ाया जाता। तो इस तरह से भाई, भगवान के भजन के बिना जीवन में दुःख ही दुःख है, सुख नहीं

है। अनेक बार अकाल पड़ता है, भयंकर वर्षा होती है जिससे कि अनाज खत्म हो जाता है। आप बताएँ कि कब से बारिश बन्द हो रही है; किसान के लिए जब बारिश नहीं होगी, तो किसान कहां से कमायेगा और कहाँ से वह तुम लोगों को अनाज सप्लाई करेगा। आज हर क्षेत्र में अशान्ति है, क्योंकि हम भगवान का भजन नहीं करते। इसलिए आपस में प्रेम नहीं, संगठन में एकता नहीं है। संगठन मजबूत नहीं होने से समाज छिन्न-भिन्न हो जाता है। हमारे गुरु महाराज जी जो ज्ञान देते हैं, मैं सच कहती हूँ कि उससे कितने ही लोगों ने इस जीवन को बदला है। कितने लोग अपने जीवन से हताश हो गये थे। जैसे सूखी खेती में तत्काल पानी पड़ जावे, तब कुछ न कुछ वह खेती हरी हो जाती है, ऐसे ही उनके जीवन फिर से हरे-भरे हो गये हैं। जो लोग अपने सिद्धान्तों के अनुसार नहीं चलते हैं, वे जीवन में दुःख ही पाते हैं। आप लोगों को गुरु महाराज जी ने संत-महात्माओं के द्वारा ज्ञान दिलाया है। क्या तुम उस ज्ञान को खो बैठे हो? तुम्हारे हृदय में भगवान का नाम होते हुए भी दुःखी क्यों हो? तुमने भगवान के नाम में मन को नहीं लगाया। तुम्हारी वृत्तियाँ, तुम्हारा मन बाहर जा रहा है। लोग इस तरह की बातें बनाते हैं कि पता नहीं कब तक वे रिसर्च करते रहते हैं। देखो, एक छोटी क्लास का विद्यार्थी होता है, उसको ए.बी.सी.डी. का ज्ञान नहीं या अ आ इ ई का ज्ञान नहीं, तो वह बिना मास्टर के, बिना अध्यापक के नहीं सीख सकता है। गुरु महाराज जी का जो ज्ञान है, सचमुच में इससे बड़ी शान्ति मिलती है। श्री हंस जी महाराज के बारे में तुमने सुना होगा, उन्होंने पूरी दुनिया

में इस ज्ञान को बाँटा है। वे कहते थे कि मेरे रहते-रहते लाखों लोगों को यह ज्ञान मिल चुका है। पर वास्तव में जब लोगों की करनी देखो, लोगों की कमाई देखो तो जीरो बटा जीरो। जीवन में भौतिक उन्नति तो बहुत कुछ कर लेते हैं, बड़े-बड़े बंगले बना लेते हैं, बड़ी-बड़ी डिग्री हासिल कर लेते हैं, पर जब ज्ञान-मार्ग

जीवन में भौतिक उन्नति तो बहुत कुछ कर लेते हैं, बड़े-बड़े बंगले बना लेते हैं, बड़ी-बड़ी डिग्री हासिल कर लेते हैं, पर जब ज्ञान-मार्ग पर उनको तोलो तो जीरो बटा जीरो। नारी हो या पुरुष, कोई भी हो, वहीं के वहीं रहते हैं।

पर उनको तोलो तो जीरो बटा जीरो। नारी हो या पुरुष, कोई भी हो, वहीं के वहीं रहते हैं। इसलिए वे अपने मार्ग से विचलित हो जाते हैं। जरा-सा भी झटका आता है, जरा-सी भी कोई बात होती है, तो वे डिगने लग जाते हैं। कहते हैं कि हिमालय पर्वत को कोई डिगा नहीं सकता है। एक पर्वत है स्विटजरलैण्ड में, जब मैं उस पर्वत पर गई, तो कहते हैं कि इस पर्वत की उपमा हिमालय पर्वत से की है। उसको भी कोई डिगा नहीं सकता है। मैंने कहा कि क्यों कहते होंगे कि इस पर्वत को कोई डिगा नहीं सकता? तो मैं जब ऊपर पहुँची और मैंने बाहर दूरबीन से देखा तो इतनी आँधी, इतना तूफान, इतना बर्फ उसमें पड़ रहा था, पर उस पर्वत को कोई डिगा नहीं सका। मतलब न जाने कितनी सदियों से उस पर बर्फ पड़ रही है, सदियों से उसमें आँधी, तूफान आते हैं, लेकिन हिमालय पर्वत की तरह एक ही जगह पर वह अडिग है। इसी तरह हमारे हिमालय को कहते हैं कि कोई शक्ति उसे हिला नहीं

सकती। जैसे पतिव्रता नारी को अधर्मी पुरुष डिगा नहीं सकता है, ऐसे ही उन पर्वतों की उपमा दी है। इसी तरह भक्त को भी पर्वत की उपमा दी है कि उसे भी कोई डिगा नहीं सकता है। गुरु महाराज जी ज्ञान देते हैं, किसका ज्ञान कराते हैं? भगवान का ज्ञान कराते हैं। देखो, इतने बड़े-बड़े मन्दिर बने हैं, इनमें किसकी पूजा होती है, भगवान की पूजा होती है। महापुरुषों ने किसका ज्ञान कराया? भगवान का ज्ञान कराया। भगवान के कितने बड़े-बड़े मन्दिर हैं, आप बताइये? जगह-जगह विशाल मन्दिर बने हैं और उनकी सब जगह पूजा होती रहती है। अनादि काल से मंदिरों में भगवान की पूजा होती आ रही है।

आपलोग इस आत्मज्ञान का प्रचार वेधड़क होकर करें। आप सब तो फक्कड़ नहीं हैं, सभी तो यहाँ गृहस्थी लोग हैं, कहा है- अगर विद्या अच्छी है और नीच के पास भी है, तो उसे ले लेना चाहिये, और ऊँच के पास है, तो फिर कहना ही क्या है! देखो, कमल का फूल कीचड़ में रहकर भी उससे न्यारा रहता है। इसी तरह आपलोग भी इस ज्ञान को अवश्य जानें, जो जान चुके हैं, वे भजन करें, सुमिरण करें। सुमिरण ही सार है। बाकी सब चीज असार है। मीराबाई कहती है-

पायो जी मैंने राम रतन धन पायो॥
वस्तु अमोलक दई मेरे सतगुरु,
किरपा कर अपनायो॥
जन्म जन्म की पूँजी पाई,
जग का सभी गँवायो।
खर्च न होवे चोर न लेवे,
दिन दिन बढ़त सवायो॥
सत की नाव खेवटिया सतगुरु,
भवसागर तर आयो॥

मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरष हरष जस गायो॥

श्री गुरु महाराज जी ने जो तुमको नाम दिया है, वह कभी भी तुम्हारे कार्य में बाधा नहीं डालता है। वह स्वयं स्वाभाविक अपने-आप ही हो रहा है, केवल उसमें मन को टिकाना पड़ता है। जिन माताओं को समझ में नहीं आया है, ये बाईयाँ हैं, इनसे समझ लें, ये समझा सकती हैं। जिन सज्जनों को ज्ञान लेना हो, ये महात्मा जी यहाँ हैं, आप लोगों की सेवा के लिए। आपलोग महात्माओं से पूछें, पूछना चाहिए। भगवान ने इसी पूछने के लिए ही तो मुँह दिया है। अगर वह गूँगा बना देता तो क्या पूछते। पर, फिर भी सन्तों ने कहा कि-

नाम जपत कुछी भला,
चुड़-चुड़ पड़े जो चाम।
कंचन देह किस काम की,
जा मुख नहीं नाम।

अगर शरीर गल गया हो और वह नाम को जपता है, तो वह शरीर कंचन शरीर से भी अच्छा है। तो जिन सज्जनों ने उस नाम को जान लिया है, बहुत अच्छी बात है, वह अभ्यास करें, भजन करें। और जिन लोगों ने नहीं जाना वे सत्संग सुने, समझें।

सठ सुधरहिं सत्संगति पाई।
पारस परस कुधातु सुहाई।

जिस तरह से गंदा-से-गंदा लोहा भी पारस पथरी के छूने से सोना बन जाता है, इसी तरह सत्संग से आदमी भक्त और सद्मार्गी बन जाता है। कहा है-

पारस और गुरु में,
बड़ों अन्तरो जान।

वह लोहा से कंचन करे,
गुरु कर ले आप समान॥

उस नाम की व्याख्या में वेद-शास्त्र

हर गये, पर उस नाम की महिमा को नहीं गा सके। नामी के पास से उसको जानना चाहिए। हम उस मर्म को जानते हैं। जिन सज्जनों को ज्ञान लेना हो, जिन्हें पहले से जिज्ञासा हो और जो शाखाओं से तैयार होकर आये हों, वे कल इन महात्माओं से जानने की कोशिश करें। कहा है कि-दरवाजा खटखटाओगे, तो खोला जायेगा। दरवाजा नहीं खटखटाओगे, तो वे जबर्दस्ती किसी को नहीं देते हैं। डॉक्टर तुम्हें जबर्दस्ती दवाई पिला सकता है,

अगर विद्या अच्छी है और नीच के पास भी है, तो उसे ले लेना चाहिये, और ऊँच के पास है, तो फिर कहना ही क्या है! देखो, कमल का फूल कीचड़ में रहकर भी उससे न्यारा रहता है। इसी तरह आपलोग भी इस ज्ञान को अवश्य जानें, जो जान चुके हैं, वे भजन करें, सुमिरण करें। सुमिरण ही सार है।

जबर्दस्ती इन्जेक्शन लगा सकता है, नली से तुम्हें जूस पिला सकता है, पर आत्मज्ञानी जब तक तुम्हारे अन्दर श्रद्धा नहीं होगी, तब तक आत्मज्ञान नहीं देगा। कहा है-“**श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्।**” यह श्रद्धा और प्यार की चीज है। यह प्रेम से ही मिलता है। कहा है-‘**प्रेम से प्रगट होय भगवाना।**’ यह प्रेम का ही सौदा है भाई। इसलिए मीरा ने भी गाया है, महलों की रानी होकर के उसने भी भगवान को याद किया- हे भगवान, हे कृष्ण, मैं तो प्रेम दिवानी, मेरा दर्द जाने न कोय। संसार के लोग क्या जानें कि उसको क्या दर्द था! उस समय भी मीरा को दुनियाँ नहीं पहचान पाई। आज उनके भजन गाते हैं, सबेरे-सबेरे ऑल इंडिया

रेडियो से उसके पद सुनाये जाते हैं और सुन-सुनकर लोग झूमते रहते हैं, जब मीरा आई तो गलियों-गलियों में घुंघरू बाँध-बाँध करके अपने भगवान के लिए नाचती रही, उस आनन्द को किसने नहीं लिया। मीरा को जहर दिया। मीरा को क्या-क्या कष्ट नहीं दिया। एक दफे उसने तुलसीदास को पत्र लिखा कि मैं बहुत दुखी हूँ, इस परिवार से, मैंने बहुत सहन कर लिया, अब मैं क्या करूँ। देखो, उसने किसी राजा से राय नहीं ली, परिवार के लोगों से

राय नहीं ली, उसने तुलसीदास को लिखा। तुलसीदास जी को अपना हितैषी क्यों समझा? क्योंकि वह समझती थी कि जैसे मैं भगवान के लिए दिवानी बन गई हूँ, वैसे ही तुलसीदास जी भी हैं और वे मुझे जो राय देंगे, वह बिल्कुल ठीक देंगे- जिसमें मेरा हित हो परिवार का भी हित हो, समाज का भी हित हो। तब

तुलसीदास जी ने उसको लिखा कि जो भगवान से बैरी बनावे, उस परिवार को छोड़ देना चाहिए। उसी चौपाई को पढ़ करके वह महल छोड़कर भगवान के धाम वृन्दावन को चली गई। मीरा को जब उसके परिवार के लोग ले जाना चाहते थे, तब उसने कहा कि नहीं, तुम मुझे अपने बन्धन से मुक्त करो। मीरा ने गाया-‘**मेरा दर्द न जाने कोई**’-जो मेरा दर्द है, उसको कोई नहीं जान सकता है। ‘**पग घुंघरू बाँध मीरा नाची रे।**’ बताओ कौन नाच सकता है? और वह भी एक महारानी। पर भगवान के नाम में उसने अपने को मिटा दिया। जो भगवान के लिए मिटता है, दुनियाँ उसके नाम के गीत गाती है। उसको याद करके, उसके पद गा-गाकर के झूमती है।

वस्तु अमोलक दर्ई मेरे सतगुरु

माताश्री मंगला जी

प्रेमी सज्जनों! देखो, दरबार में श्रद्धा होती है, तो इसकी मिट्टी में भी स्वाद लगता है। भगवान कृष्ण ने मथुरा की मिट्टी चाटी, उसमें भी उनको स्वाद लगता था। आज बहुत से फल भगवान ने दे रखे हैं, लेकिन असली फल तो वही है कि हमारे अंदर यह विचार जागे कि हम संसार में आए किसलिए हैं? और जाना कहाँ है? जब हम संसार से जाएंगे, तो कौन-सी पूंजी हमारे साथ जाएगी। इसके लिए सत्संग किया जाता है, सत्संग का मुख्य काम ही यह है कि हमारे अंदर आत्म-जागृति हो। जब तक आत्म-जागृति नहीं होगी, तब तक हम उस अध्यात्म ज्ञान को जान नहीं पाएंगे। हम खाते भी हैं, पीते भी हैं, सोते भी हैं, जागते भी हैं, अच्छा रहते हैं, भगवान ने अपनी हर अवस्था के अनुसार हमें धनवान बनाया।

एक कथा आती है कि जब जनक जी को स्वप्न हुआ कि वे आखेट के लिए गए हुए हैं। एक मृग का पीछा करते हुए वे जंगल में भटक जाते हैं, उनके साथी भी उनसे बिछुड़ जाते हैं। वे रास्ता ढूँढ़ते-ढूँढ़ते बहुत थक जाते हैं और उनको जोर की भूख भी लगती है, उनके पास भोजन नहीं था। वे भूख से परेशान एक झोपड़ी पर पहुंचते हैं, वहाँ एक बुढ़िया मां रहती थी। आवाज देने पर वह बाहर निकली तो राजा जनक ने कहा कि मां, मुझे रात भर के लिए आश्रय चाहिए। मुझे भूख भी लगी है, कुछ खाने को मिल जाता, तो बड़ी कृपा होती। बुढ़िया मां ने कहा- ठीक है। तुम रात को मेरी झोपड़ी में रह सकते हो। मैं शरीर से लाचार हूँ, अभी कुछ बना नहीं सकती। मेरे पास थोड़े-से दाल-चावल रखे हैं, तुम उसी की खिचड़ी बना लो, खा

लो। राजा ने जंगल से लकड़ियां इकट्ठी कीं और चूल्हा जलाकर खिचड़ी पकाई। चूल्हा फूंकते-फूंकते उनकी आंखों से



पानी बहने लगा। भूख की वजह से अधपकी खिचड़ी उन्होंने पत्तों पर ठंडी करने के लिए फैलाई। अभी खिचड़ी ठंडी भी नहीं हो पाई थी कि दो सांड लड़ते हुए वहाँ आए और उस खिचड़ी को मिट्टी में रौंद दिया। वे खिचड़ी भी नहीं खा सके और भूख से वे रोने लगे, उसी समय उनकी आंख खुल जाती है। लेकिन आंखों से आंसू बह रहे थे। जब वे जागते हैं, तो देखते हैं कि वह तो शाही पलंग पर लेटे हैं, नौकर-चाकर आज्ञा पालन के लिए हाथ बांधे खड़े हैं। आंसुओं से तकिया गीला हो गया है। तो उनके अन्दर एक प्रश्न उठा कि सत्य क्या है? यह जो मैं स्वप्न देख रहा था या जो मैं जागने पर देख रहा हूँ। स्वप्न में मैं भूख से परेशान भीख मांग रहा था और जागने पर मैं देख रहा हूँ कि मैं राजमहल में सुन्दर शाही पलंग पर लेटा हूँ, मेरे चारों ओर वैभव पसरा हुआ है। नौकर-चाकर मेरी आज्ञा पालन के लिए हाथ बांधे खड़े हैं। कोई कहीं कमी नहीं है। तो सत्य क्या है, यह स्वप्न सत्य है

या जो मैं जागने पर देख रहा हूँ। मनुष्य के जीवन में कई बार ऐसी घटनाएं घटती हैं, जो कई प्रश्न खड़े कर देती हैं। आप लोगों के भी बहुत से प्रश्न होंगे। सत्संग में सबका समाधान भी होगा। बहुत से प्रश्न हमारे दिमाग में चलते हैं। कई लोग पहली बार सत्संग में आएंगे और कहेंगे सत्संग क्या है? और जब सत्संग सुनते हैं, तो कहते हैं कि यहाँ सत्संग से हमारे अंदर जागृति हुई है, कोई कहेगा कि मैं फलां जगह मंदिर में जाता हूँ; जाइए, वह भी महान पुरुषों की शक्ति है, वे भी महाशक्तियों के मंदिर हैं, जिन्होंने संसार में आकर के किस तरह मानव समाज की सुषुप्त चेतना को जागृत

किया। सत्य को जानने के लिए राजा जनक ने बहुत बड़ी सभा बुलाई। तो बड़े-बड़े ज्ञानी ऋषि-मुनि सब आए, सबने अपने-अपने विचार रखे; लेकिन राजा को संतुष्टि नहीं हुई। तब अष्टावक्र जी, जिनके आठ जगह से अंग टेढ़े-मेढ़े थे, जब वे सभा में आए; तो उन्हें देखकर सारी सभा हंसने लगी। तो अष्टावक्र जी कहते हैं कि राजन, आपने मुझे इनके सामने क्यों बुलाया, इनको केवल चमड़े का ज्ञान है। ये मेरे टेढ़े-मेढ़े शरीर को देखकर हंस रहे हैं। राजन, गन्ना टेढ़ा-मेढ़ा हो सकता है, लेकिन उसकी मिठास टेढ़ी-मेढ़ी नहीं होती। राजा ने माफी मांगी, अष्टावक्र ने कहा कि हे राजन, ना वह सत्य था और ना यह सत्य है। स्वप्न भी सत्य नहीं था और जागने पर तुमने जो देखा वह भी सत्य नहीं है। जैसे जागने पर स्वप्न भंग हो जाता है, वैसे ही जब मृत्यु आती है, तो यह संसार छूट जाता है। हम थोड़े समय के लिए संसार में आए हैं, यह भी सत्य नहीं है और वह भी सत्य नहीं है। सत्य वह आत्मा

है जो इन दोनों अवस्थाओं का अनुभव कर रहा था। अष्टावक्र ने फिर राजा जनक को आत्मा का ज्ञान दिया, सत्य का बोध कराया। जब मनुष्य को सत्य का बोध हो जाता है, तो उसकी समस्त शंकाओं का समाधान हो जाता है, राजा जनक की जिज्ञासा समाधान का भी हुआ।

मुझे मीराबाई की बात याद आई, मीराबाई कहती है कि एक ही पति है संसार में, पति तो एक ही है परमपिता परमात्मा, हम सब तो गोपियां हैं। हम सब दासियां हैं। भगवान ही है पति परमेश्वर। आजकल तो समाज में परंपरा ही अलग बनती जा रही है। यहाँ बहुत-सी महिलाएं आई हुई हैं, शादी के बाद वे अपना दुःख प्रकट करती हैं। मां जी, हमारे पति ने मार दिया, हमारे पति ने हमें यह कह दिया कि तुम हमें परमेश्वर मानो। भैया, बहुत अच्छी बात है, उसे भी मान लो, अगर वह परमेश्वर जैसा व्यवहार करता है, तुम्हें अध्यात्म का ज्ञान देता है, तो वही परमेश्वर है। लेकिन, वह परमेश्वर नहीं है, वह तुम्हारी तरह जीव ही है; हम सब जीव हैं, जीवात्मा हैं। परमात्मा तो हमें अध्यात्म की शक्ति देता है, उस शक्ति को एकत्रित करने के लिए, शक्ति को केंद्रित करने के लिए, शक्ति को प्राप्त करने के लिए, यह सत्संग का आयोजन किया गया है। आओ, अपने जीवन को व्यर्थ मत गंवाओ; क्योंकि मानुष जन्म जो है बहुत अनमोल है, लाखों योनियों के बाद हमें मानुष चोला मिला है। मानुष चोला-अब तो मिला है फिर ना मिलेगा, कभी नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं। अब, इस मनुष्य जन्म में हम क्या सोच सकते हैं कि जो हमारे साथ जाएगा, उस कमाई को करें; क्योंकि यहां का कमाया धन यहीं रह जाएगा, यहां की कमाई प्रसिद्धि यहीं रह जाएगी। यहां का सब कुछ यहीं रह जाएगा। साथ जाएगा क्या? अध्यात्म की शक्ति और भक्ति साथ में जाएगी। यह सब

हम जब शास्त्र पढ़ेंगे, सत्संग सुनेंगे, तो समझ सकते हैं। शास्त्र हमें जानकारी देते हैं। जैसे, आप विदेशों में जाते हैं, किसी नए शहर में जाते हैं, तो हम गूगल मैप खोलते हैं, उसमें डायरेक्शन होती है कि यहां से अब दाहिने मुड़ो या ऐसे जाओ, सारा उसमें लिखा रहता है; तो संत-महात्मा भी उस डायरेक्शन को जनाते हैं;

जैसे जागने पर स्वप्न भंग हो जाता है, वैसे ही जब मृत्यु आती है, तो यह संसार छूट जाता है। हम थोड़े समय के लिए संसार में आए हैं, यह भी सत्य नहीं है और वह भी सत्य नहीं है। सत्य वह आत्मा है जो इन दोनों अवस्थाओं का अनुभव कर रहा था।

बताते नहीं, बताने के बाद जनाते हैं और जब जान जाओगे, तो तुम अपने जीवन लक्ष्य को प्राप्त कर लोगे। सिद्धार्थ के पास तो सब कुछ था, खजाने के खजाने थे; सब कुछ था, लेकिन जब वे एक दिन नगर में जाते हैं तो एक बीमार व्यक्ति को देखते हैं, एक मृत काया को देखते हैं, एक बूढ़े आदमी को देखते हैं, तो अपने साथी से पूछते हैं कि यह सब क्या है? तो साथी ने कहा कि एक दिन सबने ऐसे ही हो जाना है। तब उनके अंदर वैराग्य होता है कि मैं उस वस्तु को खोजूंगा, जो इन सांसारिक दुःखों से मुक्त कर सके। वह अमोलक वस्तु खोजूंगा। मीराबाई कहती हैं कि

**वस्तु अमोलक दई मेरे सतगुरु,
किरपा कर अपनायो।**

जिस पर गुरु की कृपा होती है, वही उस वस्तु को प्राप्त कर सकता है। हमारे श्री महाराज जी ने अपने जीवन को अध्यात्म में समर्पित किया। जयंती जो होती है, महान पुरुषों की ही मनाई जाती है। और इसलिए मनाई जाती है कि उस जयंती से हमें भी उस अध्यात्म ज्ञान

को जानने की प्रेरणा मिले, महापुरुषों का आशीर्वाद मिले, जिससे हम भी समाज में कुछ कर सकें। किसी अंधेरे घर में दीपक जला सकें। शुरुआत में श्री महाराज जी ने लाहौर और कराची आदि स्थानों में ज्ञान प्रचार किया, जो आज पाकिस्तान में हैं। बहुत से स्थान में जाकर के श्री महाराज जी ने प्रचार किया। उस समय तो कठिनाई भी बहुत थी। आजकल तो जहाज हो गए हैं, बढ़िया गाड़ियां हो गई हैं और इतने साधन हो गए हैं कि एक जगह से प्रवचन होता है और सारा समाज सोशल मीडिया के माध्यम से प्रवचन को अपने घर में बैठकर सुन सकता है; लेकिन, उस समय जब हिंदुस्तान-पाकिस्तान एक था, अलग नहीं हुआ था, तब से श्री महाराज जी ने अध्यात्म ज्ञान का प्रचार किया। लाहौर में प्रचार किया, कराची में किया और बहुत से स्थानों में जाकर प्रचार किया। यह हरिद्वार उनका एक मूल स्थान था। हिंदुस्तान-पाकिस्तान का पार्टीशन होने के बाद भी कुछ समय तक लाहौर से और सिंध से सिंधी भक्त आते थे, यहां स्नान करने के लिए, जब सिंधी भक्त आते थे, तो वे गुरु महाराज को ढूंढते थे कि हमें हरिद्वार के संत ने अध्यात्म का ज्ञान दिया। तब श्री महाराज जी ने हरिद्वार में एक स्थान बनाया था। और वही सिंधी आकर के दर्शन करके जाते थे, तो इस हरिद्वार की तो बहुत महिमा है। इसीलिए यहां आकर के स्वतः ही मन ढूंढने लगता है कि सत्य क्या है। श्री महाराज जी का जो त्याग और बलिदान था, उस त्याग-बलिदान का ही आज आशीर्वाद है कि जो उनकी कृपा से आज बाई जी, महात्मा जी और हम लोग, हमारे संगी-साथी भाई-बहन, ये सब पुत्र-पुत्री हैं श्री महाराज जी के, जो उस ज्ञान का प्रचार कर रहे हैं। क्योंकि जब तक अध्यात्म नहीं होगा, तब तक हमारे जीवन में परिवर्तन नहीं आएगा।

SPIRITUALITY IS THE ONLY WAY TO BRING PEACE TO SOCIETY

MATA SHRI RAJESHWARI DEVI

Dear Premies, by learning the Divine Knowledge, you now have a great opportunity to serve the society also. Organization of this program and all its preparations has been accomplished by people like you. If a member turns to alcohol or gambling, it can damage that entire household. Similarly, if a member turns towards spirituality then he takes good care of his family and makes positive contribution towards society as well.

I want good education for all so that man can get learn and improve his conditions. So you have to support these initiatives and help to spread these spiritual teachings. "Premies" should get together and organize discourses by Mahatmas, and Mahatmas should aim to travel far and wide to spread the message. This magazine publishes spiritual discourses and positive articles: this also aids the spread of teachings. Books are the lifeline of every organization. A woman came from Udhampur; a priest had given her our magazine. After reading the magazine she listened to discourses for two days and then got Divine Knowledge. If she now develops a routine of regular meditation, her life would get transformed. Don't look at man's weaknesses, for if you seek vices you'll find lots of them and if you seek man's virtues then you'll find many of them too. Saint Kabir says:

"I set out to find the worst of them and all I see is goodness,

When I peek inside my heart, I see a lot of weaknesses."

Don't look at a person's misdeeds, as one day he will have to pay for them. You go on performing your good deeds or Karmas. Our Guru Maharaj Ji always spreads spiritual teachings. He said that he derived immense joy in spreading the teachings to his disciples. He said that he liked poor people because they do meditation, have devotion and follow my advice and teachings. He liked spending time with his disciples the most.

It is his instruction to us all to spread the spiritual teachings. He used all means to accomplish this, be it a camel, a baggage cart, cycle or train. He travelled a lot to take his message to different people. Many people are gathered here and some of them got Divine Knowledge today and this is truly remarkable as their lives are now transformed. I urge you to leave negative thought patterns behind. When you meditate regularly on Holy Name, you will find inner peace.

Even great men had to go through difficult periods and testing times in their lives. The mother of this universe who was born as the wife of the great Avatar faced much pain in her life. Draupadi was wife of five extraordinary warriors and even she faced many troubled times. Those problems turn you to God and make you remember His Name.



Bhilni was born before the birth of Lord Ram. She had great faith that Ram will come to her hut one day and indeed he arrived one day. To all those places that you invite us to, we will come and organize Satsang programs. People are engaged in building Ashrams at many places. These are built primarily to provide good facilities to you otherwise we have little use for them. As far as teachings are concerned, we can give our message even from under a tree or at the bank of Ganges and people will surely flock, as the teachings are powerful and transformative.

When I ask people about meditation schedule, they always tell me that they do some meditation. But for their business they are very regular and punctual, thinking about growing it day and night. When a man truly loves

something, he will do proper Karma to achieve or establish it. The reason he finds himself handicapped on the spiritual path is because he hasn't developed full devotion or love for it. His actions are directed towards his stomach rather than on the spiritual path.

Today we are reminded of the old times when unrest rose in this world and man was unable to distinguish good from bad. Great teachers always guided him for a course correction towards the spiritual way of life to bring peace to the society and to the nation. Pandit Ji just spoke about Adi Shankaracharya who established many Maths and four Dhaams. A man of knowledge doesn't carry any negativity. He is akin to the Sun that gives light to all and doesn't divide people by caste, creed or religion. Patient could be of any religion but the doctor doesn't care about it and his only objective is to cure him.

We have many learned people here from different parts of India and they have taken an oath for developing peace and harmony. Shri Hans Ji Maharaj met many wise and powerful people but he always maintained that one should develop an awakening inside the heart. This is the only way to peace.

I take man's ability to perform Karma or action as the foremost duty. God will then support you. If a dessert is served on the table, you won't know it's delicious taste until you pick it up and eat it. As we understand the teachings of Shri Maharaj Ji, things like materialism, business or reputation would mean a little to us. The joy of spreading the spiritual teachings is truly unique!

Many people tell us that your children are wise and learned, and that you should make them enter politics, as it will help nation building and aid in spread of peace to the citizens. But I said no.

Our passion is Ram's Name, our passion is Krishna's Name

Shri Maharaj Ji taught this to all. Just as a parent educates his kids, similarly he gave the best education to us – to remember God, and to spread His message.

"One who mediates himself and other learn it,

He will surely reach salvation"

Nanak Ji said the same thing. Other learned teachers had the same message but in different languages. We failed to understand their message and have divided ourselves. We are all one and our path is the same, and it is this internal unity or connection that we need to understand. Lack of its knowledge is what has separated us. This message of our teacher is what we have to spread. We may be poor but Shri Hans Ji Maharaj has bestowed us with riches of Holy Name and this can never be taken away from us.

So we should remember the true name of God. That Holy Name is so powerful that the disciple who mediates regularly will achieve liberation. To achieve this goal of our teacher, we need to act or perform service. Look around; people from all castes are present here. Hindus are here and so are Muslims and others. Here everyone is just a human. Upon noticing a vice in someone we may scold that person, but our act is like that of a mother who loves their children and may scold or reprimand them for their own good.

I am reminded of what Shri Maharaj Ji used to say about this place, that this is such a wonderful abode where people will do breakfast and listen to spiritual discourses, and before they return home to cook their dinner they will also get darshan. In the religious books you learn that disciples performed great sacrifices, and compared to that our task is small. Kabir Ji says that one should be ready to sacrifice his life for our teacher's higher purpose. So if you want to initiate a spiritual awakening in fellow man then this message must reach every corner of this country and beyond. And until the root or foundation of different religions is understood then people will not understand this message. As man develops this understanding, it will lead to an inner transformation.

All this needs to be done in a proper manner and you may notice that it is cyclic in nature –good progress at times and not so much at other junctures. But this follows God's will. There were many clouds here but it didn't rain. Its as if nature also supports the higher purpose. In Gita, Lord Krishna says that doing the righteous action is under your control but the results or fruits are as per God's will.

Today people are killing each other over inadequate water. Once a disease spread in the cowshed of a village. I took all cows to the bank of a river, which had low water level. Somehow at night, the water level rose and the animals stayed there for a month. They used to drink and bathe in this water. All the villagers were astonished that the river developed a good flow of water since the day I arrived.

आधुनिक परिवेश में भी प्रासंगिक है मकर संक्रांति का पर्व

भा रतीय संस्कृति के विविध आयामों को अपने में समेटे हुए मकर संक्रांति वह पावन पर्व है जो सूर्य-उपासना, ऋतु परिवर्तन, पर्यावरण संतुलन, आरोग्यता, सामाजिक समरसता और आध्यात्मिक उन्नति जैसे अनेक क्षेत्रों में कल्याणकारी संदेश प्रदान करता है। यह पर्व केवल

एक उत्सव नहीं, बल्कि खगोलशास्त्र पर आधारित वैज्ञानिक चेतना और धार्मिक परंपरा का अद्भुत संगम है।

मकर संक्रांति का पर्व हमारे देश में केवल धार्मिक लाभ के लिए ही नहीं मनाया जाता बल्कि इसका खगोलीय एवं ज्योतिषीय आधार भी है। इस दिन सूर्य धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश करते हैं। इसे

उत्तरायण की शुरुआत भी माना गया है- एक ऐसा समय जो देवताओं का दिन और सतोगुण की प्रधानता का प्रतीक माना गया है। प्राचीन ग्रंथों में उल्लेख है- **“उत्तरायणं शुभं ज्ञानं दक्षिणायनमक्षयम्।”**

ज्योतिषीय दृष्टि से यह समय न केवल बुद्धि के जागरण व ऊर्जा वृद्धि का द्योतक है, बल्कि साहस और कर्मशीलता को प्रेरित करने वाला भी है। सूर्य का उत्तरी गोलार्द्ध की ओर बढ़ना वातावरण में ऊष्मा-वृद्धि और स्वास्थ्य-सुधार का स्पष्ट संकेत

देता है। महाभारत काल की कथा है कि भीष्म पितामह ने, जिन्हें इच्छा मृत्यु का वरदान मिला था, उन्होंने अपनी मृत्यु को सद्गति देने वाले उत्तरायण के इंतजार में रोक दिया और तब तक प्राण नहीं छोड़े, जब तक उत्तरायण नहीं आ गया। क्योंकि पुराणों में यह चर्चा है कि जो उत्तरायण में प्राण त्यागता है,

उसे मुक्ति प्राप्त होती है। उत्तरायण काल में तपस्या, दान और उपासना का विशेष महत्व बताया गया है। प्राचीन शास्त्रों में उत्तरायण देवताओं का दिन और दक्षिणायन रात मानी गई है। यही वजह है कि मकर संक्रांति के पावन अवसर पर श्रद्धालु लोग गंगा आदि पवित्र नदियों और सरोवरों में स्नान कर सूर्य को जल अर्पित करते हैं, सूर्य की उपासना से जीवन

में प्रकाश, विद्या, विवेक और आरोग्यता की प्राप्ति होती है। मकर संक्रांति के पावन अवसर पर स्नान, दान, तप व योग के नियम पालन करने से मनुष्य भीतर-बाहर दोनों प्रकार से पवित्र होते हैं। मकर संक्रांति प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखने का संदेश देती है। यह काल बीज संरक्षण, नई फसलों, जल-शुद्धि, वायु-संवर्धन और अग्नि-उपचार का समय माना जाता है। इस अवसर पर तिल और गुड़ का सेवन शरीर में ऊष्मा बढ़ाता है- जो पर्यावरणीय संतुलन हेतु उपयुक्त होता है।



इस पावन अवसर पर सूर्योदय के समय स्नान व सूर्य-अर्घ्य जलशुद्धि व ऊर्जा संचरण के वैज्ञानिक उपाय हैं। पतंगबाजी का पारंपरिक आनंद भी प्रकाश-वृद्धि और शीत ऋतु के बाद शरीर में आरोग्यता की दृष्टि से भी मकर संक्रांति बहुत उत्तम होता है। शास्त्र कहते हैं- **“तिलं स्निग्धं बलं दीप्तम्।”** तिल, गुड़, मूंगफली, खिचड़ी आदि

हैं। पोंगल में “थैंक्यू टू नेचर” का संदेश है। बिहू में अग्नि-पूजन तो गुजरात में आकाश-उत्सव पतंगों के माध्यम से सामाजिक आनंद का प्रतीक बनता है। आधुनिक विश्व में भी मकर संक्रांति का महत्व बहुत उपयोगी संदेश देता है। दुनिया का वर्तमान माहौल तनाव, प्रदूषण, असंतुलित भोजन, मोबाइल-स्क्रीन की लत मनुष्य को प्रकृति से दूर कर रहा है।



शरीर को गर्माहट, शक्ति, रक्त-संचार और प्रतिरोधक क्षमता प्रदान करते हैं। तिल का तेल त्वचा की रक्षा करता है, गुड़ हीमोग्लोबिन बढ़ाता है, उड़द की दाल शरीर में कैल्शियम व प्रोटीन का संचार करता है। सूर्य-स्नान विटामिन-डी का प्राकृतिक स्रोत से जुड़कर आरोग्य लाभ उपलब्ध करता है। आज की जीवनशैली में यह पर्व नेचुरल डिटॉक्स जैसा कार्य करता है। इस अवसर पर आयोजित मेलों, उत्सवों और खान-पान की सांस्कृतिक परंपराएँ हमारे व्यक्तिगत जीवन और समाज को लाभ पहुंचाता है। भारत के हर क्षेत्र में मकर संक्रांति को अलग नामों से मनाया जाता है- पोंगल (तमिलनाडु), उत्तरायण (गुजरात), माघ बिहू (असम), सुग्गी (कर्नाटक) और खिचड़ी पर्व (उत्तरी भारत) में पुकारा जाता है।

इन मेलों में किसान अपनी नई फसल अर्पित करते

मकर संक्रांति इस स्थिति में ध्यान, दान, संयम की शक्ति उपलब्ध कराता है। सूर्य-ऊर्जा और प्राकृतिक जीवन से जुड़ाव का परिवेश सृजित करता है, साथ ही सामुदायिक सद्भाव और उत्सव-चेतना के माध्यम से जीवन को पुनः संतुलन की ओर ले आता है। यह पर्व आध्यात्मिक उन्नति, सकारात्मकता और स्वास्थ्य का सुंदर संगम है। मकर संक्रांति का उत्सव हमें भीतर के अंधकार से बाहर आने और प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने का महान संदेश देता है।

यह पर्व हमें श्रेय मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है। श्रेय मार्ग ही वह उत्तम मार्ग जो मनुष्य को मुक्ति की ओर ले जाता है। इसलिए जीवन में ज्ञान मार्ग पर चलें, ज्ञान का प्रकाश ही हमारा पथ प्रशस्त करता है, जो हमें मानव जीवन के लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति तक ले जाता है, यही मकर संक्रांति पर्व मनाने का मुख्य उद्देश्य है। ■

लोहड़ी है सामाजिक एकता और महिला सुरक्षा का पर्व

लोहड़ी उत्तर भारत का अत्यंत उल्लासपूर्ण और लोक-संस्कृति से भरा हुआ पर्व है। मकर संक्रांति से एक दिन पूर्व मनाया जाने वाला यह उत्सव मात्र ऋतु परिवर्तन का संकेत नहीं, बल्कि मनुष्य की सामूहिक संवेदनाओं, सामाजिक सौहार्द और आध्यात्मिक जागरण का जीवंत प्रतीक है। जनवरी की कड़ाके की ठंड के बीच जब प्रकृति शांत और निद्रित मालूम होती है, तब लोहड़ी का अग्नि-अनुष्ठान जीवन में नवीन ऊर्जा और गर्माहट का संचार करता है।

लोहड़ी विशेष रूप से पंजाब, हरियाणा, हिमाचल, जम्मू और उत्तर भारत में मनाई जाती है। इस दिन लोग शाम होते ही अपने घरों या मोहल्लों में सामूहिक रूप से अग्नि प्रज्ज्वलित करते हैं। अग्नि के चारों ओर परिवार, पड़ोसी और समुदाय एकत्र होकर तिल, मूँगफली, रेवड़ी और मक्का अग्नि को समर्पित करते हैं। ये अर्पण केवल सामग्री नहीं, बल्कि हमारे भीतर के अहंकार, कटुता और नकारात्मक भावनाओं को अग्नि में अर्पित करने का प्रतीक हैं। लोहड़ी से जुड़ी सबसे प्रसिद्ध कथा पंजाब के

वीर लोकनायक दुल्ला भट्टी की है। मुगलकाल में दुल्ला भट्टी को गरीबों और विशेषतः कन्याओं का रक्षक माना जाता था। उस समय कुछ अत्याचारी लोग निर्धन कन्याओं का अपहरण कर उन्हें बेचते थे। दुल्ला भट्टी उन कन्याओं को मुक्त करवाकर उनके विवाह की व्यवस्था करते थे।



उनके साहस, लोक-सेवा और न्यायप्रियता के कारण लोग उन्हें “पंजाब का रॉबिनहुड” भी कहते हैं।

लोहड़ी की रात गाए जाने वाले प्रसिद्ध गीत “सुंदर-मुंदरिए हो... दुल्ला भट्टी वाला...” इसी वीर की स्मृति

में गाए जाते हैं।

इस कथा का संदेश है कि पर्व केवल आनंद का अवसर नहीं होते; वे समाज में नैतिकता, वीरता और मानवता को जागृत करने का माध्यम भी होते हैं। दुल्ला भट्टी की कथा हमें याद दिलाती है कि धर्म का सार केवल पूजा नहीं, बल्कि सत्य और संरक्षण है।

लोहड़ी सामाजिक एकता का अत्यंत प्रभावी प्रतीक है। इसमें किसी जाति, धर्म या वर्ग का भेद नहीं हर व्यक्ति एक ही अग्नि के चारों ओर खड़ा होता है। यह दृश्य बताता है कि सामुदायिक जीवन ही संस्कृति की वास्तविक शक्ति है। आनंद बाँटने से बढ़ता है, और संबंधों की गर्माहट समाज के तनाव को कम करती है।

अग्नि के चारों ओर घूमना इस बात का संकेत है कि हम जीवन में सदैव सत्य, पारदर्शिता और पवित्रता के केंद्र के आसपास रहें। गुड़ और तिल दोनों का मिलन यह शिक्षा देता है कि जीवन तभी मधुर बनता है, जब हम कड़वाहट को पिघलाना और दूसरों के प्रति मिठास बनाए रखना सीखें। यह पर्व हमें सामाजिक दूरी मिटाने, संवाद बढ़ाने और परिवार व समुदाय को एक सूत्र में बाँधने की प्रेरणा देता है। लोहड़ी नई फसल (विशेषतः गेहूँ और सरसों) के आगमन का स्वागत भी है। यह किसान की मेहनत का उत्सव है। खेतों की सुनहरी लहरें और धरती की ताजगी यह बताती है कि प्रकृति सदैव उदार है, बस हमें उसके प्रति कृतज्ञ रहना चाहिए।

किसान लोहड़ी पर अग्नि को प्रणाम कर कहता है “हे प्रकृति, मेरे श्रम को अन्न में बदलने के लिए धन्यवाद!” यह पर्व सिखाता है कि कर्म ही जीवन का आधार है, प्रकृति हमारे जीवन की माता है और कृतज्ञता वह शक्ति है जो मनुष्य को विनम्र बनाती है।

भारतीय जीवन-दर्शन में अग्नि को पवित्रतम तत्व माना गया है। अग्नि प्रकाश भी है, ऊर्जा भी और परिवर्तन का साधन भी। लोहड़ी की अग्नि इसके तीन प्रमुख अर्थों को स्पष्ट करती है। हमारी अज्ञानता का दहन होता है। जब हम अग्नि के सामने प्रार्थना करते हैं, तो हम प्रतीकात्मक रूप से अपने भीतर छिपे भय, क्रोध, ईर्ष्या और नकारात्मकता को जलाने का संकल्प लेते हैं।

लोहड़ी प्रतीकात्मक रूप से जीवन में ऊर्जा के संचार का द्योतक है। अग्नि सूर्य का ही पृथ्वी पर एक रूप है। इसलिए लोहड़ी सूर्य की नई दिशा में बढ़ने और बढ़ते दिन का स्वागत

करने का भी प्रतीक है। इसी के साथ यह पवित्रता के उदय को भी दर्शाता है। अग्नि के चारों ओर घूमना जीवन को सत्य और शुभता के मार्ग पर ले जाने का संकेत है।

सूर्यदेवहमेंनईऊर्जा,सकारात्मकताऔरवृद्धिकाआशीर्वाद दें। सभी प्राणी सुखी हों, और जीवन में शुभता का प्रकाश बने, हम अग्नि और सूर्य दोनों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। लोहड़ी का सबसे बड़ा आकर्षण है परिवार का एक साथ होना। घरों में हँसी, गीत, ढोलक, नृत्य ये सब मिलकर रिश्तों में खुशी की नई रोशनी भर देते हैं। बुजुर्ग बच्चों को आशीर्वाद देते हैं, और बच्चे उपहार पाकर प्रसन्न होते हैं। यह पर्व सिखाता है कि परिवार वह आग है, जहाँ प्रेम निरंतर जलता रहे, तो जीवन कभी ठंडा नहीं पड़ता। लोहड़ी सामूहिक आनंद और संबंधों की ऊष्मा का अनूठा अनुभव है। आज की डिजिटल, व्यस्त और तनावग्रस्त जीवनशैली में लोहड़ी हमें यह याद दिलाती है कि वास्तविक सुख मानव-संवाद में है, न कि केवल तकनीक में। इस पर्व का आधुनिक संदेश यह है कि वास्तविक संबंध ही जीवन का आधार है। परंपराएं हमें हमारी जड़ों से जोड़ती हैं। सामूहिक उत्सव मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य दोनों के लिए आवश्यक हैं। इस प्रकार, लोहड़ी आधुनिक जीवन में भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी सदियों पूर्व थी। लोहड़ी एक प्रकाश पर्व है जो समाज को एकता, आनंद, करुणा और आध्यात्मिकता की अग्नि से प्रकाशित करता है। दुल्ला भट्टी की कथा हमें न्याय और महिला संरक्षण की प्रेरणा देती है। अग्नि सत्य, ऊर्जा और शुद्धता का प्रतीकात्मक मार्ग दिखाती है। और सामूहिकता हमें यह समझाती है कि “जहाँ एकता की अग्नि जलती है, वहाँ किसी अंधकार का टिकना संभव नहीं।” यही लोहड़ी का संदेश है अपने भीतर प्रकाश जगाओ, कड़वाहट को पिघलाओ, और समाज में शुभता और प्रेम का प्रसार करो।

यह पर्व महिला अस्मिता की रक्षार्थ समाज में जागृति का भी पर्व है, जो सिखाता है कि दुष्ट और अत्याचारी कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, जब आप सत्य-संकल्पित होकर उसके सामने डट कर खड़े हो जाते हैं, तो वह परास्त हो जाता है। जैसे दुल्ला भट्टी ने ब्राह्मण पुत्रियों की रक्षा की, वैसे ही हमें भी स्त्रियों की अस्मिता की रक्षा के लिए दुल्ला भट्टी जैसे साहस और संकल्प के साथ दुराचारियों के समक्ष डट कर खड़ा होना होगा, तभी हम सही मायने में लोहड़ी पर्व को सार्थक कर पाएंगे। ■

आध्यात्मिक विकास का विज्ञान हैं-चार आश्रम

भारतीय जीवन-दर्शन में “चार आश्रम” की व्यवस्था मानव जीवन को समझने और जीने का अत्यंत संतुलित एवं वैज्ञानिक तरीका है। यह केवल धार्मिक कल्पना नहीं बल्कि मनुष्य के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास का विज्ञान है।

1- ब्रह्मचर्याश्रम- ब्रह्मचर्याश्रम जन्म से 25 वर्ष की आयु तक माना गया है। यह जीवन का आरंभिक चरण है, जहां बालक शिक्षा, अनुशासन, संयम, साधना और चरित्र निर्माण से अपनी नींव मजबूत करता है। इसी काल में ऊर्जा, ज्ञान और बल का संचय होता है। विज्ञान भी मानता है कि बचपन और युवावस्था में मस्तिष्क सर्वाधिक ग्रहणशील होता है। यह काल गुरुकुल में गुरु के सानिध्य में जीवन दर्शन की कला का ज्ञान

प्राप्त करने का है, जिसमें बालक लौकिक विद्या के साथ आध्यात्मिक विद्या का व्यावहारिक बोध प्राप्त करता है।

2-गृहस्थाश्रम- गृहस्थाश्रम 26 वर्ष से 50 वर्ष की आयु तक निश्चित किया गया है। ब्रह्मचर्याश्रम के पश्चात यह कर्म और उत्तरदायित्व का काल है। व्यक्ति विवाह कर समाज, परिवार और राष्ट्र के प्रति अपने दायित्व निभाता है। धन तथा भौतिक संसाधन अर्जित करता है। संतानोत्पत्ति तथा उनका पालन-पोषण, शिक्षा और संस्कार प्रदान कर उन्हें कर्तव्य बोध कराता है। ब्रह्मचर्य की साधना से अर्जित संयम गृहस्थ जीवन में संतुलन लाता है। गृहस्थ आश्रम ही अन्य तीनों आश्रमों का आधार है, क्योंकि यही सबका पालन-पोषण और सहयोग करता है।

3- वानप्रस्थाश्रम- वानप्रस्थाश्रम 51 वर्ष से 75 वर्ष की आयु तक माना गया है। जब संतानें स्वावलंबी हो जाती हैं, तब व्यक्ति संसार से थोड़ा विरक्त होकर आत्मचिंतन, साधना और ज्ञानदान में प्रवृत्त होता है। यह समय अनुभव बांटने,

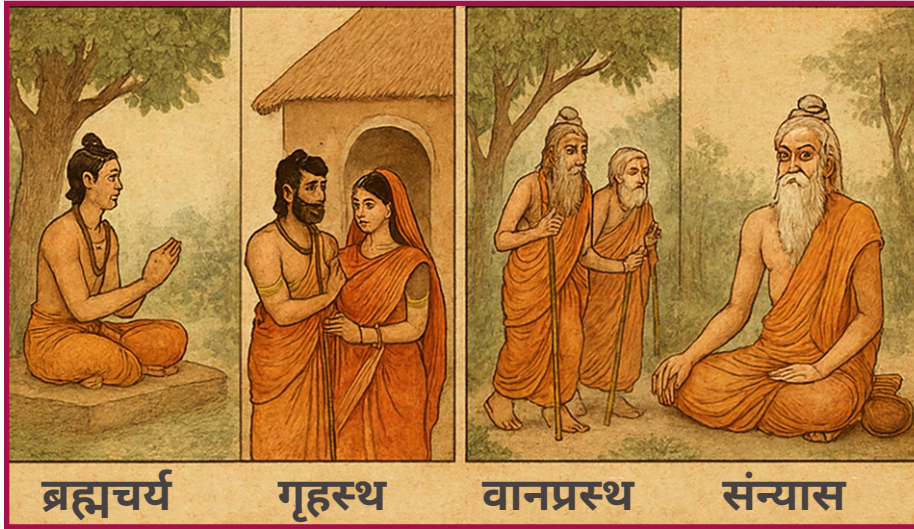
प्रकृति के समीप रहने और शांति प्राप्त करने का होता है। आधुनिक मनोविज्ञान भी इसे जीवन की “दूसरी पारी” कहता है। यह काल जीवन का महत्वपूर्ण काल है जिसमें वह अपने सांसारिक दायित्वों का निर्वाह पूर्ण कर आत्म-साक्षात्कार का मार्ग प्रशस्त करता है जिससे वह जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो सके।

4- संन्यासाश्रम- संन्यासाश्रम 76 वर्ष से 100 वर्ष अर्थात् मृत्यु पर्यन्त माना गया है। यह जीवन का अंतिम और सर्वश्रेष्ठ चरण है। जब व्यक्ति सभी मोह-माया से मुक्त होकर परमात्मा

की ओर अग्रसर होता है। विगत तीनों आश्रमों में अर्जित अनुभव, शिक्षा और संस्कारों का सहारा लेकर सांसारिक वासनाओं से विरक्त होकर ध्यान और आत्म-साक्षात्कार के माध्यम से वह पूर्ण शांति और

मुक्ति का अनुभव करता है। यह ऐसा काल है, जिसमें वह स्वयं ईश्वर आराधना में निरत रहते हुए अन्य साधकों व जिज्ञासुओं को ईश्वर चिंतन की ओर उन्मुख करता है, यही संन्यास आश्रम का प्रमुख कर्तव्य और धर्म है।

चारों आश्रम जीवन को एक सुंदर लय देते हैं- पहले परिश्रम, फिर कर्म, फिर वैराग्य और अंत में मुक्ति। यही जीवन का सच्चा विज्ञान है- संतुलन, आनंद और आत्म-बोध की ओर अग्रसर होना। हमारे ऋषियों ने बड़े ही वैज्ञानिक ढंग से जीवन को चार आश्रमों अथवा कालों में बांटकर उनके लिए स्पष्ट कर्तव्य निर्धारित किए हैं, जो संपूर्णतः मानव के सांसारिक जीवन दायित्वों का निर्वहन और आत्मकल्याण के मार्ग को स्पष्ट रूप से परिभाषित करते हैं। इन आश्रमों को आधार बनाकर हम भी अपने जीवन को चार चरणों में विभाजित कर उनके कर्तव्य और दायित्वों का निर्धारण कर सकते हैं, जिससे जीवन को संतुलित, सार्थक और परिपूर्ण बनाने में सुगमता रहेगी। ■



स्वामी विवेकानंद यूरोप यात्रा पर अपने आत्मबल, धैर्य और ईश्वर पर विश्वास रखे, थे। वे अपने एक अंग्रेज मित्र के साथ तो सबसे विकट परिस्थितियों में भी वह अडिग रह सकत हैं।' इस उदाहरण का यही अभिप्राय है कि जब कोई साथ न दे तो स्वयं का साहस, आत्मबल और ईश्वर पर भरोसा ही काम

आत्मबल और ईश्वर पर विश्वास

छिप गए। जबकि उनके साथ टहल रही उस आता है। इसलिए हमेशा अपने साहस, आत्मबल अंग्रेज की एक महिला मित्र घबराकर गिर पड़ी। और ईश्वर पर भरोसे को बढ़ाने के लिए सद्पुरुषों यह देखकर स्वामी जी ने उन्हें बचाने का और कोई की संगति में रहना चाहिए; जिससे किसी भी उपाय न पाकर साहस पूर्वक स्वयं सांड के सामने प्रकार की विकट स्थिति का सामना कर सकें। ■

खड़े हो गए। उस समय उन्होंने मन ही मन सोचा- 'अच्छा, अब सांड पटकेगा ही; लेकिन साथ में यह भी अनुमान लगा रहे थे कि सांड उन्हें कितनी दूर उछालेगा, और बचने के लिए क्या किया जाए।' आश्चर्य की बात यह हुई कि कुछ कदम आगे बढ़कर अचानक सांड ठहर गया और फिर धीरे-धीरे पीछे हटकर चला गया। अंग्रेज मित्र लज्जित हुआ कि अपनी जान बचाने के लिए वह भागकर छिप गया था। उसकी महिला मित्र ने जिज्ञासावश पूछा, 'आपने ऐसी खतरनाक स्थिति का सामना करने का साहस कैसे जुटाया?' स्वामी जी ने उत्तर दिया, 'संकट और मृत्यु से डरना नहीं चाहिए। यदि मनुष्य

दीनदयाल दया करके

दीनदयाल दया करके भवसागर से कर पार मुझे। टेक।
नीर अपार न तीर दिसे किम धीर धरुं अब मैं मन में।
मेरी नाव डुबाय रही मग में शरणागत जानके तार मुझे।
दीनदयाल दया करके भवसागर से कर पार मुझे॥ 1॥
ग्राह बसे बलवान बड़े जल घेर पड़े बहु मारग में।
बाज रही विपरीत हवा तुंही एक बचावनहार मुझे।
दीनदयाल दया करके भवसागर से कर पार मुझे॥ 2॥
छूट गया सब साथ मेरा कुछ हाथ में जोर रहा भी नहीं।
अब नाथ न देर लगाय जरा निज बांह पसार उबार मुझे।
दीनदयाल दया करके भवसागर से कर पार मुझे॥ 3॥
तेरा नाम जहाज बड़ा जग में सब वेद पुरान बतावत हैं।
ब्रह्मानंद जपूं दिन रात सदा प्रभु कीजिए पार किनार मुझे।
दीनदयाल दया करके भवसागर से कर पार मुझे॥ 4॥

श्री हंस जयंती 125 वर्ष के सुअवसर पर
परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी की प्रेरणा से
**अरुणाचल प्रदेश के दिरांग में मंडला टॉप पर
महात्मा बुद्ध की 21 फुट ऊँची प्रतिमा स्थापित**

दिरांग। श्री हंस जयंती 125 वर्ष के सुअवसर पर 8 नवम्बर, 2025 को अरुणाचल प्रदेश के पश्चिम कामेंग जिले के दिरांग क्षेत्र में समुद्र तल से लगभग 11,000 फुट की ऊँचाई पर स्थित मंडला टॉप एक नई आध्यात्मिक शक्ति का केंद्र बन गया है। यहाँ विकसित हो रहे परिसर में 21 फुट ऊँची भगवान बुद्ध की भव्य प्रतिमा की स्थापना द हंस फाउंडेशन के प्रेरणास्रोत परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं करुणामयी माताश्री मंगला जी के स्नेह, मार्गदर्शन और दिव्य संकल्पों का परिणाम है। भगवान बुद्ध की भव्य प्रतिमा का अनावरण कलक्तांग, विधायक श्री टीसेन चौम्बे के कर कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्तियों तथा हंस कल्चरल सेंटर के प्रतिनिधि श्री दिनेश रावत सहित सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

इस प्रतिमा के निर्माण में उनका अथक, भावपूर्ण और भगीरथ सहयोग रहा है, जो केवल एक मूर्ति-स्थापना नहीं, बल्कि शांति, करुणा और मानवीय मूल्यों के प्रचार-प्रसार का पवित्र प्रतीक है।

यह स्थल आज पूर्वोत्तर भारत में आध्यात्मिक पर्यटन का एक उभरता हुआ केंद्र बन रहा है। तीर्थयात्रियों और पर्यटकों की बढ़ती संख्या से स्थानीय जनता को रोजगार के नए



अरुणाचल प्रदेश के दिरांग में मंडला टॉप पर स्थापित
महात्मा बुद्ध की 21 फुट ऊँची भव्य प्रतिमा



अरुणाचल प्रदेश के दिरांग में मंडला टॉप पर स्थापित महात्मा बुद्ध की 21 फुट ऊँची भव्य प्रतिमा का अनावरण करते हुए विधायक श्री टीसेन चौम्बे तथा गणमान्यजन

अवसर प्राप्त हो रहे हैं, जिससे उनके परिवारों की आजीविका सशक्त हो रही है और पूरे क्षेत्र में खुशहाली और प्रगति का वातावरण बन रहा है।

परमपूज्य श्री भोले जी महाराज और माताश्री मंगला जी का सदैव यही संकल्प रहा है-

**हर चेहरे पर मुस्कान हो,
हर घर में खुशहाली हो,
और हर जीवन में
शांति व समृद्धि का प्रकाश
फैले।**

मंडला टॉप की यह दिव्य प्रतिमा इसी संकल्प का जीवंत परिणाम है।

भगवान बुद्ध की शिक्षाएँ, शांति, करुणा, सद्भाव और नैतिक आचरण, संपूर्ण मानवता के लिए अमर मार्गदर्शक हैं।

प्रतिमा की स्थापना से लाभ-

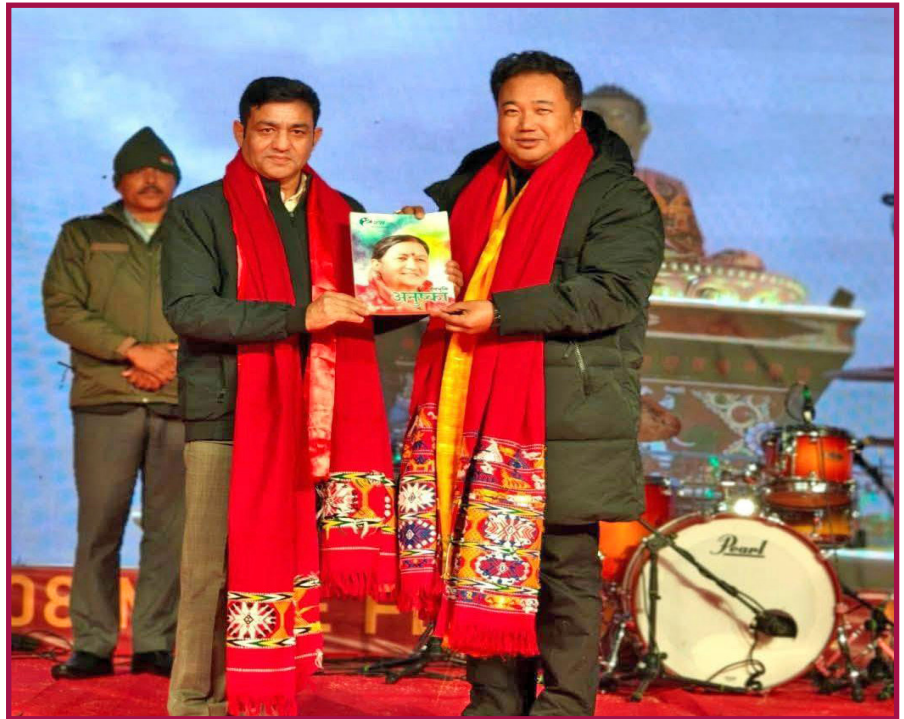
- 1- स्थानीय क्षेत्र को आध्यात्मिक पहचान देती है।
- 2- वर्तमान व भावी पीढ़ियों को आध्यात्मिक प्रेरणा प्रदान करती है।
- 3- क्षेत्र की आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाती है।
- 4- दिरांग को एक महत्वपूर्ण बौद्ध तीर्थस्थल के रूप में स्थापित करती है।

यह प्रतिमा आने वाली पीढ़ियों के लिए आस्था का आधार-स्तंभ और शांति का संदेशवाहक बनेगी।

द हंस फाउंडेशन की यह पहल केवल एक निर्माण योजना नहीं, बल्कि यह संदेश है कि जब सेवा और आध्यात्मिकता साथ आती हैं, तो समाज में विकास और कल्याण स्वाभाविक रूप से प्रस्फुटित होते हैं। ■



अरुणाचल प्रदेश के दिरांग में मंडला टॉप पर स्थापित महात्मा बुद्ध की 21 फुट ऊँची भव्य प्रतिमा का अनावरण के सुअवसर पर मंच पर उपस्थित गणमान्यजन



अरुणाचल प्रदेश के दिरांग में मंडला टॉप पर स्थापित महात्मा बुद्ध की 21 फुट ऊँची भव्य प्रतिमा का अनावरण के सुअवसर पर विधायक श्री टीसेन चौम्बे को संस्था के जनकल्याणकारी कार्यों की अनुष्का पत्रिका भेंट करते हुए हंस कल्चरल सेंटर के प्रतिनिधि



अरुणाचल प्रदेश के दिरांग में मंडला टॉप पर स्थापित महात्मा बुद्ध की 21 फुट ऊँची भव्य प्रतिमा का अनावरण के सुअवसर पर भारी संख्या में उपस्थित श्रद्धालुजन

श्री हंस जयंती 125 वर्ष के सुअवसर पर
परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी की प्रेरणा से
भारत दर्शन शैक्षणिक यात्रा

उत्तराखंड के देवप्रयाग क्षेत्र में स्थित विद्यालयों के मेधावी छात्रों के लिए आयोजित 'भारत दर्शन शैक्षणिक यात्रा' विद्यार्थियों को विज्ञान, तकनीक, संस्कृति और राष्ट्र निर्माण के मूल्यों से परिचित कराने का एक अद्वितीय अवसर प्रदान कर रहा है।

इस वर्ष 'भारत दर्शन शैक्षणिक यात्रा-2025', में लगभग 60 विद्यालयों के मेधावी छात्रों ने गुजरात और दिल्ली के प्रमुख स्थलों, जिनमें मुख्यतः आई.आई. टी अहमदाबाद, साइंस सिटी, अमूल डेयरी प्लांट, साबरमती आश्रम, स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, श्री हंसलोक आश्रम दिल्ली तथा कॉन्स्टिट्यूशन क्लब-का अध्ययनात्मक भ्रमण किया।

इस प्रेरक यात्रा ने बच्चों को ज्ञान, दृष्टिकोण, नेतृत्व क्षमता और आत्मविश्वास में महत्वपूर्ण वृद्धि की तथा उन्हें अनेक प्रेरणादायी संवादों, अनुभवों और सीखों का अमूल्य लाभ मिला।

इस संपूर्ण शैक्षणिक यात्रा में दिल्ली प्रवास के दौरान इन मेधावी छात्रों को 'द हंस फाउंडेशन' के प्रेरणास्रोत परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगलाजी का आशीर्वाद, स्नेह और मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

शिक्षा के क्षेत्र में माताश्री मंगला जी के विशिष्ट योगदान और उनके करुणामयी संरक्षण ने इस यात्रा को अत्यंत सफल और सार्थक बनाया। उनके दिव्य आशीर्वाद से सम्पन्न यह शैक्षणिक भ्रमण इन विद्यार्थियों के लिए एक अविस्मरणीय प्रेरणा बना। साथ ही इन बच्चों के जीवन में ज्ञान, संस्कार और उज्ज्वल भविष्य की नई दिशा का मार्ग प्रशस्त हुआ। ■



भारत दर्शन शैक्षणिक यात्रा के अंतिम पड़ाव पर श्री हंसलोक आश्रम, दिल्ली में श्री विनोद कण्डारी, विधायक, देवप्रयाग परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए



द हंस फाउंडेशन के सौजन्य से आयोजित भारत दर्शन शैक्षणिक यात्रा के दौरान छात्र-छात्राओं ने गुजरात राज्य के विभिन्न प्रमुख संस्थानों एवं ऐतिहासिक स्थानों का भ्रमण किया



भारत दर्शन शैक्षणिक यात्रा के दौरान श्री हंसलोक आश्रम, दिल्ली में छात्र-छात्राओं ने परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी से भेंट कर उनका पुनीत सानिध्य एवं मार्गदर्शन प्राप्त किया



-: पत्रिका संबंधी सूचना :-

सभी आदरणीय महात्मा/बाईगण एवं प्रचारकों से निवेदन है कि अध्यात्म-ज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु आप अपने क्षेत्र में “हंसलोक संदेश” पत्रिका को अधिक से अधिक प्रेमी-भक्तों एवं अध्यात्मज्ञान पिपासुओं तक पहुँचायें। पत्रिका के माध्यम से आपको हर माह परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला जी के देशभर में आयोजित जनकल्याण समारोहों में दिए गए प्रवचनों को पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त होगा। साथ ही समारोहों के सुन्दर चित्र और विस्तृत विवरण पढ़ने का अवसर मिलेगा। इसके अलावा संस्थागत आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं जनकल्याण से संबंधित गतिविधियों की भी सूचना व समाचार मिलेंगे। इसलिए प्रत्येक प्रेमी परिवार में नियमित रूप से पत्रिका अवश्य मंगाई जाए।

डाक से पत्रिका की सुलभ प्राप्ति के लिए गाँव/क्षेत्र के सभी प्रेमी भक्त एक साथ किसी एक प्रेमी-भक्त के नाम व पते पर पत्रिकाएं बंडल रूप में मंगवा सकते हैं।

नोट:- (1) हंसलोक संदेश पत्रिका की रसीद काटते समय पाठक का पेन नम्बर, आधार नम्बर तथा मोबाइल नम्बर रसीद पर अवश्य लिखें।

(2) पत्रिका की एक रसीद (पर्ची) 100/- रुपये से अधिक की न काटी जाए।

(3) पत्रिका के लिए मनीआर्डर भेजते समय अपना पेन नम्बर, आधार नम्बर और मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

(4) यदि आप एक से अधिक पत्रिकाएं बंडल के रूप में मंगाना चाहते हैं तो मो.नं-9038675826 पर संपर्क कर पूरी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

एक प्रति मूल्य- रु.10/-

हंसलोक संदेश पत्रिका मंगाने का पता:-

कार्यालय - हंसलोक संदेश

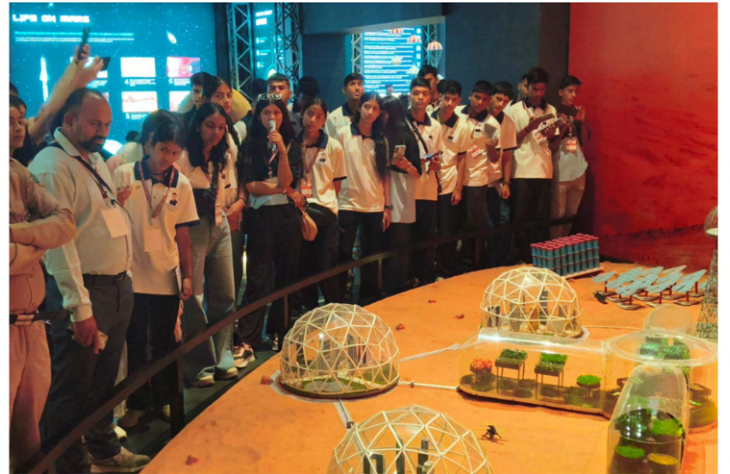
श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, भाटी माइंस रोड, भाटी, छतरपुर,

नई दिल्ली-110074 संपर्क सूत्र- 8860671326

विशेष:- पत्रिका संबंधी अपने अमूल्य सुझावों से हमें अवगत कराते रहें। आपके सुझाव हमारे लिए मार्गदर्शन का कार्य करेंगे। -सम्पादक

जनवरी, 2026 के पर्व-त्योहार

- 1 जनवरी गुरुवार- नव वर्ष-2026 का शुभारंभ
- 3 जनवरी शनिवार- पौष पूर्णिमा, माघ स्नान आरंभ
- 6 जनवरी मंगलवार- सकट चौथ/ संकष्टी चतुर्थी
- 13 जनवरी मंगलवार- लोहड़ी
- 14 जनवरी बुधवार- मकर संक्रांति, पोंगल
- 18 जनवरी रविवार- मौनी अमावस्या
- 23 जनवरी शुक्रवार- वसंत पंचमी
- 26 जनवरी सोमवार- गणतंत्र दिवस
- 29 जनवरी गुरुवार- जया एकादशी



मेधावी छात्र-छात्राओं के लिए 'भारत दर्शन शैक्षणिक यात्रा-2025'

उत्तराखंड के देवप्रयाग क्षेत्र में स्थित विद्यालयों के मेधावी छात्रों के लिए आयोजित 'भारत दर्शन शैक्षणिक यात्रा' विद्यार्थियों को विज्ञान, तकनीक, संस्कृति और राष्ट्रनिर्माण के मूल्यों से परिचित कराने का एक अद्वितीय अवसर प्रदान कर रहा है। इस वर्ष 'भारत दर्शन शैक्षणिक यात्रा-2025', में लगभग 60 विद्यालयों के मेधावी छात्रों ने गुजरात और दिल्ली के प्रमुख स्थलों, जिनमें मुख्यतः आईआईटी अहमदाबाद, साइंस सिटी, अमूल डेयरी प्लांट, साबरमती आश्रम, स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, श्री हंसलोक आश्रम, दिल्ली तथा कॉन्स्टिट्यूशन क्लब का अध्ययनात्मक भ्रमण किया। इस प्रेरक यात्रा ने बच्चों को ज्ञान, दृष्टिकोण, नेतृत्व क्षमता और आत्मविश्वास में महत्वपूर्ण वृद्धि की तथा उन्हें अनेक प्रेरणादायी संवादों, अनुभवों और सीखों का अमूल्य लाभ मिला। इस यात्रा में दिल्ली प्रवास के दौरान इन मेधावी छात्रों को 'द हंस फाउंडेशन' के प्रेरणास्रोत परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं पूज्य माता श्री मंगला जी का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। शिक्षा के क्षेत्र में माता श्री मंगला जी के विशिष्ट योगदान और उनके करुणामय संरक्षण ने इस यात्रा को अत्यंत सफल और सार्थक बनाया। यह शैक्षणिक भ्रमण इन विद्यार्थियों के लिए एक अविस्मरणीय प्रेरणा तो बना ही साथ ही इनके जीवन में ज्ञान, संस्कार और उज्ज्वल भविष्य की नई दिशा का मार्ग प्रशस्त हुआ।



आध्यात्मिक सत्संग-भजन कार्यक्रम के वीडियो **YouTube** पर उपलब्ध हैं। **YouTube** पर **HANSLOKTV** चैनल को अवश्य सब्सक्राइब करें और श्री भोले जी महाराज व माता श्री मंगला जी तथा संत-महात्माओं के सत्संग-भजन से आत्मलाभ प्राप्त करें।